शिव-भक्ति-रस-धारा

संक्षिप्त शिव महापुराण गायन शैली में

राघव किंकरी
डा० निर्मल बांगा

श्री गणेशाय नमः श्री साम्ब सदाशिवाय नमः श्री सीतारामाभ्याम् नमः

शिव-भक्ति-रस-धारा

राघव किंकरी

डा० निर्मल बांगा

राघव प्रकाशन, सहारनपुर

© : राघव किंकरी **डा०निर्मल बांगा**

संस्करण : **प्रथम, श्रावण - 2023**

आवरण : विपुल मित्तल
विशेष सहयोग : आदित्य नारायण देव, सहारनपुर मो. 8979458185
कृष्ण लाल मिड्ढा, सहारनपुर मो. 9627251047
लेजर टाइपसैटिंग : **आकार, भगत सिंह मार्ग, सहारनपुर**

प्रकाशक : **राघव प्रकाशन,**
सहारनपुर (उ.प्र.)

मुद्रक : सृजन प्रेस, नगर, सहारनपुर

मूल्य : 101/- रुपये (पेपर बैक)

Shiv Bhakti Ras Dhara *by Raghav Kinkri* ***Dr. Nirmal Banga***
Rs. 101/–(Paper Back) Mob.: +91 80031 34222

समर्पण

परमपिता परमात्मा को कोटिशः नमन करते हुए,

गुरु माँ के आशीर्वाद से पोषित होते हुए

गोलोकवासी माता-पिता एवं पति की

अनुकम्पा का अनुभव करते हुए,

आदरणीय संतो विप्रों की आशीष रुपिणी कृपा

को आत्मसात् करते हुए राघव किंकरी

'शिव भक्ति रस धारा'

देवाधिदेव महादेव को समर्पित करती है।

– राघव किंकरी

आत्म-निवेदन

यह गुण साधन ते नहिं होई।

तुम्हरी कृपा पाव कोई कोई॥

गोस्वामी जी द्वारा मानस में लिखी यह चौपाई दर्शाती है कि जब कोई कल्पनातीत सत्कर्म अनायास घटित होता है तो वह प्रयास साध्य नहीं होता। प्रभु की कृपा साध्य होता है। (मैं भी अपने जीवन में प्रभु की अहेतुकी कृपा का ही अनुभव कर रही हूँ) भागवत रसामृत, भागवत धारा, मानस-रस-धारा का गायन शैली में लेखन मेरे द्वारा किये गये प्रयास से नहीं अपितु प्रभु की अहेतुकी कृपा के फलस्वरूप हुआ हैं। अब 'शिवभक्ति रस धारा' का लेखन एक अद्‌भुत चमत्कार-सा प्रतीत होता हैं। मैं देवालय में अपने प्रभु के समक्ष हाथ जोड़कर खड़ी थी कि अचानक श्रीमती सुमन गोसाईं ने पीछे से मुझे हिलाते हुए कहा आंटी जी! आपने अपने इष्ट के लिए तो लिख दिया अब मेरे इष्ट भोले पर भी लिखिये। वैसे भी वह आपके इष्ट के इष्ट हैं। चौंक गई मैं! क्योंकि मैंने तो कुछ भी नहीं लिखा था लिखवाने वाले थे मेरे श्रीराम, नाम मेरा हो रहा था। सामने ही शिवालय था। मैंने कहा आप भोले की साक्षी में कह रही हो भोले सुन रहे हैं। वे कृपा करेंगे तो आपका मनोरथ पूरा हो जायेगा। भोले

तो वास्तव में भोले हैं ही लगभग 20 दिनों बाद ही कृपा हो गई **'शिव भक्ति रस धारा'** (सात संहिता में विभक्त 24000 श्लोकों वाले शिव महापुराण का संक्षिप्त रूप), का लेखन प्रारम्भ हो गया।

शिव महापुराण जनसामान्य के लिए पठन में सुलभ, मात्र 581 छन्दों में बद्ध हो गया। देवाधिदेव महादेव की महान् अनुकम्पा का प्रयत्क्ष दर्शन। मैं कोई रचनाकार व कवियत्री नहीं हूँ।

मानस रचनाकार ने सही ही तो कहा – ये गुण साधन ते न होई।

राघव किंकरी

डॉ. निर्मल बांगा

श्री साम्ब सदाशिवाय नमः

शिव भक्ति रस धारा

ॐ नमः शंकरायच, मयस्करायच, नमः शिवायच।

यह महा प्रयास ऋषियों की तपस्या, साधना को संजोये रखने के लिए नारदीय शृंखला में एक असाधारण प्रयास "शिव भक्ति रस धारा" नामक सुन्दर पुस्तक के अलौकिक अविष्कारिय शब्दों को शास्त्रीय पद्धति से रचने का अदभूद बौधिक संकलन भगवान शिव के अदभूद ज्ञान रूप, ध्यान रूप, बैराग्य रूप एवं रसिक रूप का सुन्दर, सुडौल, समृद्ध रूप का दर्शन इस पुस्तक के माध्यम से जन-जन को शिवजी की एक लौकिक छटा का संगीत, कवित पद के माध्यम से आप श्री ने अनूठा प्रयास दिखाया, जिससे समाज को युगों-युगों तक आपकी रचना से लाभ प्राप्त होगा।

आप एक अदभुद शब्दों के जनक है इसलिए हम आपको "शब्द जानकी" नाम से संबोधन करते है। और आपके इस असाधारण पुस्तक "शिव भक्ति रस धारा" की रचना के लिए बहुत बहुत साधुवाद देते हैं।

इसी प्रकार आपका स्वास्थ शतम जीवेत शरदं हो यही हमारी आपके प्रति अनुप्रिती और साधुवाद है।

श्री श्री 1008 श्री महामंडलेश्वर
श्री इन्द्रदेवजी सरस्वती महाराज

॥ श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

श्री शरणागत आश्रम ट्रस्ट

श्रीजानकी वल्लभ मार्ग, रामनगर कॉलोनी, वृन्दावन-281121 (मथुरा)
मो : 8171985223, 9528826646
अध्यक्ष : बिहारी दास

"शिव भक्ति रस धारा"

दिनांक : 26 जनवरी 2023
बसन्त पंचमी

संगीतमय शैली में संक्षिप्त शिवपुराण

ब्रह्माम्भोधि समुद्भवं कलिमल प्रध्वंसनं चाव्ययं
श्री मच्छम्भु मुखेन्दु सुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामय भेषजं सुखकरं श्रीजानकी जीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्॥

भरत सकल सुरवृन्द विषम गरल जेहिं पान किय।
तेहिं न भजसि मन मंद को कृपाल संकर सरिस॥
(रामचरित मानस)

मानव मात्र के कल्याण के लिए श्री वेद-व्यास जी, वेद के चार विभाग किये, फिर उसका सरलीकरण करके अठारह पुराणों की रचना की जिससे सहजता पूर्वक तत्त्व का बोध हो जाय।

श्री शिवपुराण में भगवान शंकर के दिव्यतत्त्व का वर्णन किया गया है एवं अनेक दिव्य कथाओं का समावेश किया गया है। जिन्हें पढ़कर, गाकर, श्रवण करके जीव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

"शिव के मंत्र को जपने वाला, शिव का सामीप्य पाता है।
शिव के भक्त की महिमा भारी, शिवरूप ही वह कहलाता है॥
प्रकृति जाल में फंसा हुआ, जीव बद्ध कहलाता है।
उसको वश में करने वाला, मोक्ष के पद को पाता है॥
(शिवभक्ति रस धार)

H - 226, Indl. Area, Bhiwadi. Ph. : 01493-223543, Fax : 223843, E-mail : gopinathdrniraj@yahoo.com

॥ श्रीजानकी वल्लभो विजयते ॥

श्री शरणागत आश्रम ट्रस्ट

श्रीजानकी वल्लभ मार्ग, रामनगर कॉलोनी, वृन्दावन-281121 (मथुरा)
मो : 8171985223, 9528826646
अध्यक्ष : बिहारी दास

(2)

पत्रांक

दिनांक : ....

समय-समय पर महापुरुषों ने सृष्टि के जीवों के कल्याण हेतु गूढ़ ग्रन्थों को सहज भाषा में अनुवादित करके महान परोपकार किया है। उसी श्रृंखला में परम भक्तमती, परम विदुषी, निर्मल बांगा जी ने संक्षिप्त शिवपुराण गायन शैली में रचना करके, शिवपुराण की कथाओं को रसमय बना दिया है।

"माता का मंदिर जो बनाता है, सारे कुलों को तारता है।
भवबन्धन से मुक्त है होता, देवी लोक में जाता है॥
उमा नाम के दो अक्षर का जो उच्चारण करता है।
है साक्षात् देवी का गण, भगवती को प्यारा लगता है॥

परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीरामायण की रचना संस्कृत में करते थे, आसुतोष भगवान ने आज्ञा दी कि सहज, सरल भाषा में रचना करो, उसी प्रकार श्री शिवपुराण की कथाओं के सरलीकरण की आज्ञा परम भक्ता निर्मल बांगा जी को भगवान शंकर ने, शिवमंदिर में प्रदान किया है।

आपकी लेखन शैली इतनी सरस है कि पाठक प्रसंग में डूब जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ "शिवभक्ति रस धार" के लिए बहुत बहुत शुभ मंगल कामना है।

संतचरण रज याचक,
बिहारीदास

0132-762320

सरस्वती युवा सगंठन ट्रस्ट (रजि०)

निकट पंत विहार, फेस-III, दिल्ली रोड, सहारनपुर

सन्दर्भ सख्या.............. दिनांक 17/5/2023

श्री गणेशाय नमः
जय श्री राम

सभी प्रभुप्रेमियो को जय श्री राम। हमें यह लिखते हुए अति हर्ष हो रहा है कि हमारी सम्मानित बहन श्रीमती निर्मल बाँगा जी निरन्तर लेखन कार्य मे सलंग्न है, अपनी सशक्त लेखनी के द्वारा इन्होने सर्वप्रथम 1. श्री भागवत रसामृतम
2. श्री भागवत धारा
3. श्री मानस रस धारा की संगीतमयी
रचना का उद्‌बोधन करते हुए इन पावन ग्रन्थो को जनकल्याण के लिए जन-जन तक पहुँचाने का सराहनीय कार्य किया है। भगवद् प्रेरणा से उत्कट परिश्रम एवं पुरुषार्थ से इस श्री शिव महापुराण को श्री शिव भक्तिरसधारा मे संगीतमय रूप देकर सरल भाषा में हम तक पहुँचाने का जो आलौकिक कार्य कर रही है। उसके लिए हम आपके आभारी है।

जो सुनत गावत कहत समुझत, परम पद नर पावई।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई॥

आप प्रभु की कृपा के पात्र हो। प्रभु श्री राम ने भी स्वयं अपने मुखारविन्द से कहा है -

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं॥
जो गंगाजलु आनि चढाइहि। सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि॥
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि। भगति मोरि तेहि संकर देइहि॥

सुदीक्षा

देवी सुदीक्षा सरस्वती
सरस्वती सत्संग भवन, पंत विहार
सहारनपुर

आभार

किसी रचना पर भले ही नाम एक व्यक्ति का अंकित होता हैं पर उसको पूर्णता परमात्मा की कृपा, प्रकृति का सहयोग एवं अनेक प्रेरक तत्वों (चाहे वो स्थावर हो अथवा जंगम) द्वारा प्राप्त होती है। किसी की प्रेरणा होती है, किसी का मार्गदर्शन मिलता है और किसी का गतिशील होने के लिए उत्साहित किया जाना होता है। अतः ये सभी हृदय से आभार के पात्र होते हैं।

प्रस्तुत रचना 'शिव-भक्ति-रस-धारा' के लेखन में परम पूज्यनीय 1008 महामंडलेश्वर इन्द्रदेव सरस्वती जी महाराज, श्री बिहारीदास भक्तमाली जी महाराज, आचार्य अजय शरण जी महाराज एवं आदरणीया देवी सुदीक्षा सरस्वती जी का पूर्णरूपेण मार्गदर्शन एवं आशीष लेखिका को प्राप्त हुआ है। अतः इन सभी महान विभूतियों के प्रति अपना सादर हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

अनुज कृष्ण लाल मिड्ढा एवं सुरेन्द्र पाल सचदेव का लेखिका को हर रचना में प्रेरक सहयोग रहा है। अतः उनकी हृदय से आभारी हूँ। डॉ० नीरज गर्ग (अस्थि रोग विशेषज्ञ भिवाड़ी), डा० अनन्त अग्रवाल (नेत्र रोग विशेषज्ञ, सहारनपुर) आशियाना आंगन की पूर्णिमा भावन, सुनीता भारद्वाज, अंजलि सिसोदिया, ममता महावर के आभार बिना तो

रचना की पूर्णता ही नहीं हैं। प्रत्येक संहिता का श्रवण करके **राघव किंकरी** के मनोबल को उन्होंने ही बढ़ाया है।

पुत्र पुनीत–पुत्रवधू गीता, पुत्री राशि–जामाता राकेश, पौत्र राघव, पौत्री गौरी, दौहित्री सृष्टि, तनीषा की प्यार भरी प्रेरणा राघव किंकरी के मनोबल को सदैव गतिशीलता देती रही है अतः ये सभी कृतज्ञता के पात्र हैं। अनुजा श्रीमती स्नेह चोपड़ा एवं उनके सुपुत्र शुभम द्वारा सदैव दिये गये सहयोग के लिए हार्दिक आभार।

इसके अतिरिक्त अनेक सम्माननीय संतों का भी आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है। इस रचना के लेखन में व्यक्त अथवा अव्यक्त रूप से जिनका भी जहाँ कहीं भी मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है। उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए–

– राघव किंकरी

डॉ॰ निर्मल बांगा

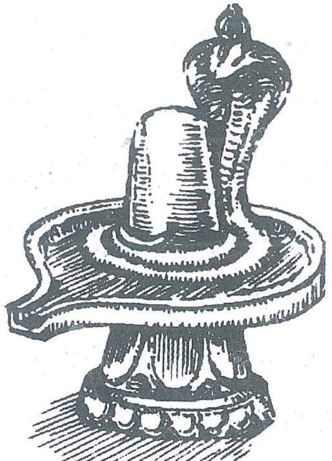

शिव पुराण महिमा

शिव पुराण को करूँ नमन। शिव ने ही किया इस का प्रणयन॥
शिव पुराण जो भी सुनता। भोले उस पे कृपा करता॥
जो करते हैं शिव की कथा। दूर हो जाती उन की व्यथा॥
शिव हैं करुणा के अवतार। उनका आश्रय जीवन आधार॥
निर्मल मन से शिव को पाएँ। छल प्रपञ्च उन्हें नहीं भाये॥
शिवलिङ्ग की महिमा भारी। कहते स्वयं भोले भण्डारी॥
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग पावनकारी। दर्शन इनका मङ्गलकारी॥
लिङ्ग रूप में हैं निराकार। वेर उनका है रूप साकार॥
शिवलिङ्ग की पूजा जो करता। भोले उनके सब दुःख हरता॥
भगवती शिवा जग माता है। और भोले पिता कहलाता है॥
शिव और शिवा परस्पर नहीं भिन्न। काशी है शिव से उत्पन्न॥
शिव शिवा का यहाँ सदा है निवास। प्रलय में भी न होता इसका विनाश॥
प्रणव (ओंकार) शिव मुख से है प्रकटा। पञ्चाक्षर का यह उत्पत्ति कर्ता॥
पञ्चाक्षर मंत्र की महिमा महान। इसके जापक का हो कल्याण॥
बेलपत्र शिव को भाये। शिवलिङ्ग पे इसको जो चढ़ाये॥
हो जाता उस का कल्याण। भोले का मिलता प्यार महान॥

अनेकों लिए शिव ने अवतार। जग का करने को उद्धार॥
जो करता शिव की भक्ति। सुलभ हो जाती उसे मुक्ति ॥
आशुतोष हैं मेरे भोले। श्रद्धा से इनका नाम जो ले॥
शिव उसपे अपनी कृपा करते। खाली झोली उस की भरते॥
शिव हो तुम करुणा के अवतार। कर दो हम सब को भव से पार॥
राघव किंकरी की है विनती। अपने चरणों की दो भक्ति॥

शिव-भक्ति-रस-धारा

श्री शिव महापुराण माहात्म्य

शौनक ऋषि श्री सूत से बोले, हमें सुनाइये कल्याणी कथा।
जिससे शिव भक्ति मिल जाये, दूर हो जाये मन की व्यथा।। 1
कलियुग में आसुरी प्रकृति, के हो गए हैं सारे जीव।
मङ्गलमय साधन को बताएँ, जिससे पा जाएँ हम शीव।। 2
सूत जी बोले शिव पुराण की, मङ्गलमयी कथा सुनाता हूँ।
काल व्याल के त्रास का नाशक, उत्तम साधन को बताता हूँ।। 3
शिव पुराण है परमेश्वर, शिव जी का मङ्गलमय स्वरुप।
इस को पढ़ने सुनने वाला, पाता है सुख परम अनूप॥ 4
सब पापों से मुक्ति मिलती, पा जाता है शिव का लोक।
उसके जीवन में भर जाता, प्रभु शिव भक्ति का आलोक।। 5
संहिताएँ हैं इसमें सात, श्लोकों की संख्या चौबीस हजार।
चारों पुरुषार्थों का प्रदाता, जो इसे लेता हृदय में धार।। 6
सूत जी से शिव महिमा सुनकर, शौनक ऋषि बोले ये वचन।
जिस पापी का उद्धार हुआ हो, उस की कथा कराओ श्रवण।। 7
सूत जी धर्म विमुख देवराज, ब्राह्मण की कथा सुनाते हैं।
दूसरों का धन हड़पने वाला, आचरण हीन बताते हैं।। 8
पर, अन्त समय में दैवयोग से, शिव पुराण का किया श्रवण।
मरने पर दयासागर साम्ब, शिव के लोक में हुआ गमन।। 9
शिव में प्रेम बढ़ाने वाली, और कथा का कराएँ श्रवण।
शौनक जी की विनती सुनकर, सूत जी बोले ऐसे वचन।। 10

वाष्कल ग्राम में रहता था, बिन्दुग नाम का एक ब्राह्मण।
सुन्दर सुशीला पत्नि थी पर, वेश्याओं में लगा था मन।। 11
बुरे कर्मों में ही उस पापी, ने बिताया सब जीवन।
मर कर बना पिशाच भयंकर, कष्टों को करना पड़ा सहन।। 12
पति मरने पर पत्नि चंचुला, यत्र तत्र करती है भ्रमण।
एक दिन एक मन्दिर में उसने, शिव की कथा का किया श्रवण।। 13
व्यभिचारिणी स्त्री मर कर, भयंकर कष्टों को पाती है।
ब्राह्मण के मुख से यह सुनकर, वह बहुत डर जाती है।। 14
पूछती है वह विप्र देव से, कैसे होगा मेरा उद्धार।
शिव पुराण की कथा सुनो, उस से ही होगा बेड़ा पार।। 15
उचित समय पर चेत गई हो, मन में तुम्हारे पश्चात्ताप।
पश्चात्ताप से पापों से, मिलने वाले कटते संताप।। 16
विप्र सुनाते शिव पुराण, वह दत्त चित्त हो सुनती है।
विरक्त भाव को पाया उसने, जब प्राणों को तजती है।। 17
शिव के भेजे हुए विमान से, वह शिव पुरी में आती है।
कर्पूर जैसे गौरवर्ण, महादेव का दर्शन पाती है।। 18
आँखों में अश्रू की धारा, सारे शरीर में है रोमाञ्च।
शङ्कर ने करुणा से देखा, पार्वती ने बुलाया पास।। 19
भगवती पार्वती ने उसको, अपनी सखी बनाया है।
आनन्द में भर कर चंचुला ने, उनकी स्तुति को गाया है।। 20
चंचुला बोली हे स्कन्द माता, आद्या प्रकृति का रूप है आप।
हे पराशक्ति जग की सृष्टि, पालन और लय करती आप।। 21
स्तुति से हर्षित पार्वती जी, कहतीं उस को माँगों वर।
हाथ जोड़ कर बोली चंचुला, आँखों में अश्रू भरकर।। 22

मेरे पति वेश्यागामी थे, नहीं जानती उन की गति।
कैसे होगा उनका उद्धार, इसी में मेरी भ्रमित मति।। 23
बोली गिरिजा तुम्हारे पति ने, पिशाच योनि को पाया है।
यह सुनकर के चंचुला के मन, भारी दुःख समाया है।। 24
बोली हे माता! उनका, किस विधि से होगा उद्धार।
शिव पुराण की कथा श्रवण ही, करेगी उन का बेड़ा पार।। 25
करुणावश माँ गौरी ने, गन्धर्व राज तुम्बुरु बुलाया है।
अपनी सखि चंचुला के पति का, सारा हाल सुनाया है।। 26
चंचुला के संग तुम्बुरू जी, विन्ध्य पर्वत पर जाते हैं।
उस पिशाच को शिव पुराण की, सातों संहिता सुनाते हैं।। 27
पाप मुक्त हो प्राण तजे जब, दिव्य देह को पाया है।
पत्नि संग शिव लोक में जाकर, शिव के गुणों को गाया है।। 28
भोले ने उस पे करके कृपा, पार्षद अपना बनाया है।
शिव पुराण की महिमा का, कोई पार न पाया है।। 29
विधि विधान से जो भी श्रोता, सुनता है शिव का यह पुराण।
मोक्ष को पाता निष्कामी, सकामी पाता अभीष्ट महान।। 30

॥ श्री शिव पुराण माहात्म्य पूर्ण हुआ ॥

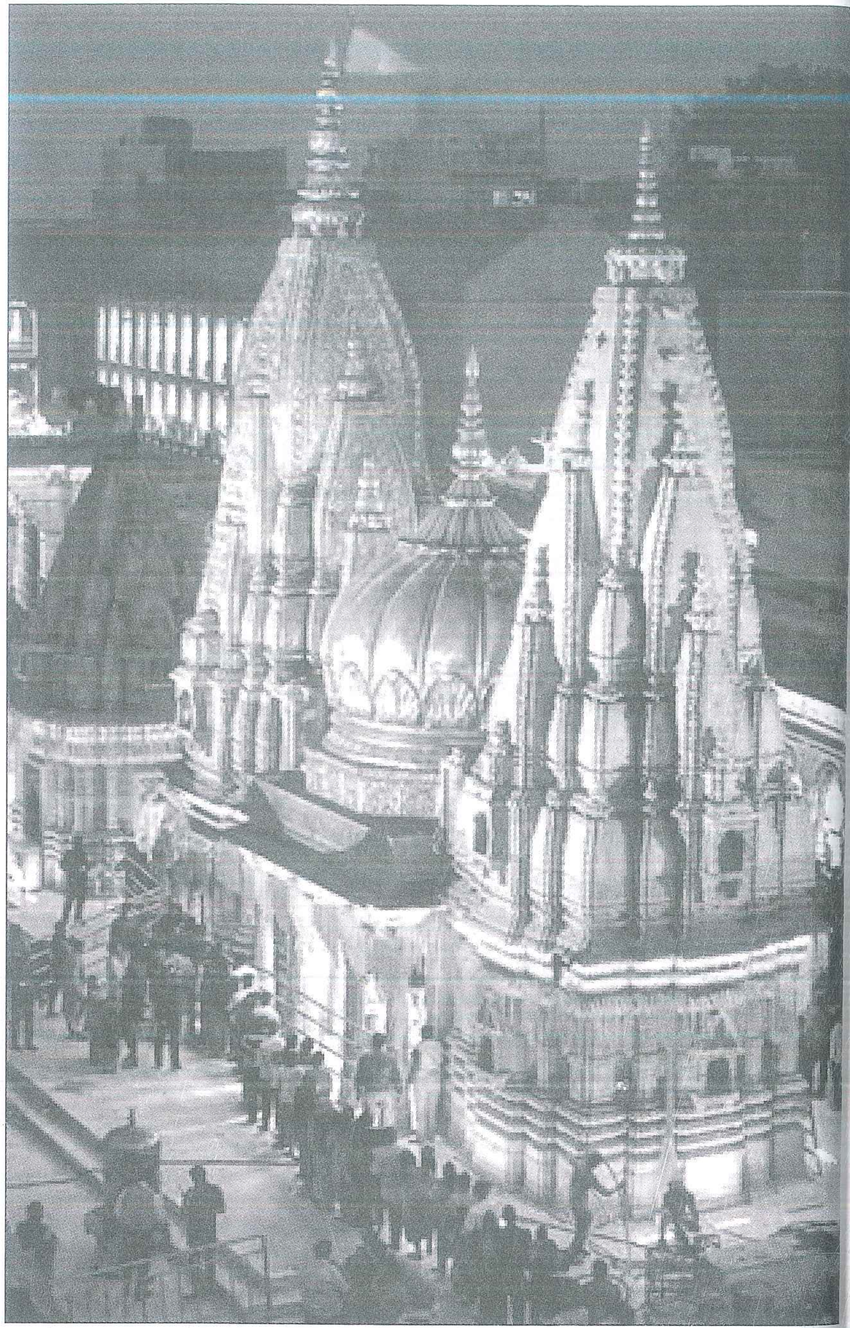

काशी विश्वनाथ मन्दिर

शिव भक्ति–रस–धारा

प्रथम विद्येश्वर संहिता

खेल खेल में जो जग रचते, करते पालन और संहार।
उन अम्बिका पति शङ्कर को, नमन करती हूँ बारम्बार।। 1
ज्ञानयज्ञ का किया आयोजन, प्रयाग में मुनियों ने एक बार।
मुनियों के दर्शन को पहुँचे, सूत जी पाके यह समाचार।। 2
सूत जी से मुनियों ने पूछा, करके उनका स्वागत सत्कार।
कल्मष राशि कलियुग में, जीवों का होगा कैसे उद्धार।। 3
चारों वर्णों के धर्मों का, कलियुग में हो जायेगा लोप।
कोई छोटा–सा उपाय बतायें, जिससे मिट जायें सारे शोक।। 4
सूत जी बोले कलिमल नाशक, शिव पुराण उत्तम साधन।
वेद कल्प इस शिव पुराण का, शिव जी ने ही किया प्रणयन।। 5
बारह संहिताएँ है इसमें, श्लोकों की संख्या है एक लक्ष।
गुरु व्यास ने छोटा किया, समास कला में जो हैं दक्ष।। 6
इस पुराण में भक्ति ज्ञान, वैराग्य तीनों का है गान।
पठन श्रवण से मिल जाता है, भव बंधन से जीव को त्राण।। 7
शिव भक्ति के साधन तीन, श्रवण, कीर्तन और मनन।
तीनों जो न कर पाये, करे लिङ्ग व मूर्ति आराधन।। 8
सूत जी मुनियों को लिङ्ग, उत्पत्ति का वृत्तान्त बताते हैं।
नन्दिकेश्वर ने सनत् को सुनाया, वो ही तुम्हें सुनाते हैं।। 9
श्रेष्ठता पर ब्रह्मा विष्णु में, हुआ भयंकर वाद विवाद।
भयभीत देवता कैलास गए, शिव को बताया अपना विषाद।। 10

दोनों के मध्य शिव ने अग्नि, स्तम्भ का रूप धरा जो विशाल।
थाह पाने को विष्णु शूकर, ब्रह्मा हंस बन गए पाताल।। ।11
निराश हो विष्णु लौट आए, पर ब्रह्मा ने न मानी हार।
केतकी पुष्प को साक्षी बनाकर, कह दिया मैने पाया आधार।। 12
अन्तर्यामी शिव ने कपटी, ब्रह्मा को नहीं दिया सम्मान।
विष्णु की सत्य निष्ठा से, उन्हें रूप दिया अपने समान।। 13
ब्रह्मा से बोले शिव तुमने, लिया झूठ का है आधार।
तुम्हारे मंदिर कहीं न होंगे, न होगा पूजन सत्कार।। 14
कपटी केतकी को भी झूठी, गवाही देने के कारण।
दुष्ट बता के पूजा से अपनी, कर दिया उस का निष्कासन।। 15
ईशत्व तो केवल मेरा है, तुमने किया व्यर्थ अभिमान।
क्षमा किया सब को तब देवों, ने की शिव की स्तुति महान।। 16
ब्रह्मा विष्णु दोनों देवों ने, शिव का वहाँ किया अर्चन।
शिवरात्रि यह दिन कहलायेगा, प्रसन्न हो बोले शिव जी वचन।। 17
लिङ्गरूप में प्रकट हुआ, लिङ्ग स्थान कहलाए यह भूतल।
शिव रात्रि व्रत रखने वाला, पायेगा सर्वोत्तम फल॥ 18
ब्रह्म तो केवल शिव ही हैं, निराकार भी और साकार।
लिङ्ग वेर दोनो रुपों में, पूजा शिव को है स्वीकार।। 19
लिङ्ग पूजा को मेरे भोले, सबसे श्रेष्ठ बताते हैं।
मंत्र ओङ्कार से लिङ्ग पूजक, शिव के पद को पाते हैं।। 20
शङ्कर जी ही कर्ता हैं, सृष्टि के जो पाँच है काम।
सृष्टि, स्थिति, संहार तिरोभाव, और अनुग्रह इनके नाम।। 21
इन पाँचों के भार वहन को, शिव हैं पाँच मुख वाले।
पाता शिवपद पंचमुखी, शिव को जो मन से ध्याले।। 22

सृष्टि स्थिति अपने कृत्य, ब्रह्मा विष्णु को किये प्रदान।
ये भूल गए थे अपने कृत्य, आ गया था इनमें अज्ञान।। 23
ज्ञान सिद्धि को शिव शम्भू ने, उन दोनों को दिया आदेश।
मेरा मंत्र ओंकार जपो, अज्ञान रहे न तुम में लेश।। 24
प्रणव भी यह कहलाता है, पंचाक्षर मंत्र इससे उत्पन्न।
दोनों मंत्रों को जपने से, सारे मनोरथ हो सम्पन्न।। 25
शिवलिङ्ग परितः भूतल, पुण्य क्षेत्र कहलाता है।
स्थापनकर्ता के क्रम से, वह महिमा को पाता है।। 26
देवो ऋषियों ने जिस स्थल को, वास स्थान बनाया है।
वे भी तीर्थ क्षेत्र कहलाते, वहाँ वास को पुण्य बताया है।। 27
नदी सागर जल पावन है, सूत जी सब को बताते हैं।
जो करते इनमें स्नान, जीवन में धन्यता पाते हैं।। 28
अग्नि देव ब्रह्म यज्ञादि का, सूत जी वर्णन करते हैं।
सात वारों की महिमा बताई, जग हित शिव जिन को रचते हैं।। 29
तप और दान की महिमा बताकर, गृहदान की महिमा बताई है।
ईश्वर को अर्पित कर्म ही, प्राणी के लिए सुखदायी हैं।। 30
जो शिव के बोधक शिवलिङ्ग की, श्रद्धा से पूजा करता है।
महादेव की भक्ति पाता, भव से पार उतरता है।। 31
शिव के मन्त्र को जपने वाला, शिव का सामीप्य पाता है।
शिव के भक्त की महिमा भारी, शिव रूप ही वह कहलाता है।। 32
प्रकृति जाल में फंसा हुआ, जीव बद्ध कहलाता है।
उसको वश में करने वाला, मोक्ष के पद को पाता है।। 33
सूत जी ने शिव लिङ्ग के, कई प्रकार बताये हैं।
प्रणव ही प्रथम लिङ्ग कहलाता, जापक ने सब फल पाये हैं।। 34

सब शिव लिङ्गों में पार्थिव शिवलिङ्ग श्रेष्ठ कहलाता है।
उस की पूजा करने वाला, पापों से मुक्त हो जाता है।। 35
शिव के आठ नामों* से इस लिङ्ग की पूजा की जाती।
विधि से की गई पार्थिव पूजा, भोग मोक्ष की है दाती।। 36
सूत जी अब ऋषि मुनियों को बेल पत्र की महिमा सुनाते हैं।
इसके मूल में तीर्थों का, वास है उनको बताते हैं।। 37
महादेव का रूप है यह, जो मूल में करें इसके पूजन।
शिव के लोक को पाते हैं, सुखों में उनके हो वर्धन ।। 38
धन्य शिव के उपासक और, जिनके मुख में शिव का नाम।
उनको पाप नहीं छू सकता, पाते हैं वे शिव का धाम।। 39
शिव का नाम ही गंगा है, विभूति यमुना कहलाती।
सरस्वती रुद्राक्ष है, त्रिवेणी रूप में फल दाती ।। 40
इन तीनों का धारक मेरे, शिव को बहुत ही प्यारा है।
ब्रह्मा विष्णु आदि देवो, ने भी इनको धारा है।। 41
शिव विभूति मङ्गल की दाता, स्नान इसमें जो करते हैं।
तीर्थ स्नान का फल वो पाते, भव बंधन उनके कटते हैं।। 42
सूत जी बोले शिव जी को, रुद्राक्ष बहुत ही भाता है।
दर्शन करने मात्र से प्राणी, पाप मुक्त हो जाता है। 43
रुद्राक्ष की उत्पत्ति की कथा, शिव जी उमा को सुनाते हैं।
उसी कथा को सूत जी, ऋषियों के समक्ष बतलाते हैं।। 44
घोर तपस्या के पश्चात्, नयन खोलते हैं जब हर।
अश्रु की कुछ बूंदे गिरी, रुद्राक्ष वृक्ष बनी धरती पर।। 45

---
* हर, महेश्वर, शम्भु, शूलपाणि, पिनाकधृक, शिव, पशुपति एवं महादे

कई रंगों के हैं रुद्राक्ष और अनेक हैं इनके आकार।
पाप मुक्त होता वह प्राणी, रुद्राक्ष माला जो लेता धार।। 46
एक से लेकर चौदह मुख वाले रुद्राक्ष बताते हैं।
रुद्राक्ष को धारण करने वाले, भुक्ति मुक्ति को पाते हैं।। 47
सम्पूर्ण हुई विद्येश्वर संहिता, रुद्र संहिता अब गायेंगे।
इसके वक्ता श्रोता के, भव बन्धन कट जायेंगे।। 48

।। विद्येश्वर संहिता पूर्ण।।

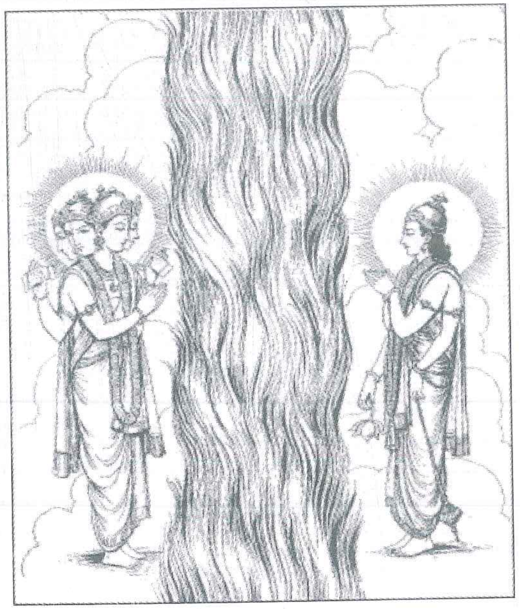

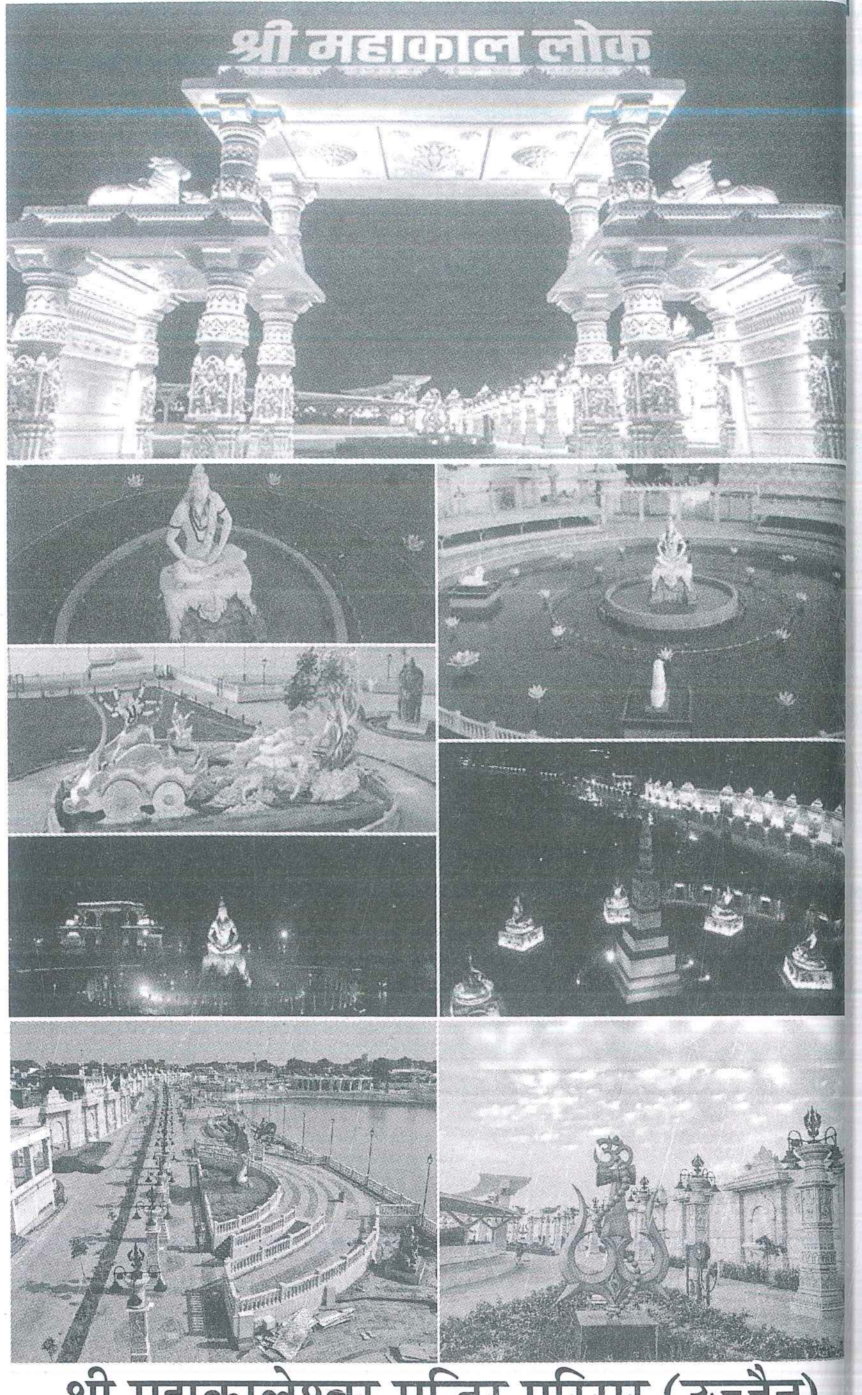

श्री महाकालेश्वर मन्दिर परिसर (उज्जैन)

शिव-भक्ति-रस-धारा

द्वितीय रुद्र संहिता

प्रथम सृष्टि खण्ड

जग की उत्पत्ति स्थिति और लय के कारण उमापति।
ऐसे पुरुषोत्तम शिव का वंदन, शिव चरणों में हो मेरी रति।। 1
त्रिकालज्ञ श्री सूत जी से, कहते हैं सारे ऋषिगण।
शिव तत्व को समझाएँ, कथाओं से तृप्त नहीं अभी मन।। 2
शिव की कथा में प्रेम जानके, सूत जी अति हर्षाते हैं।
ब्रह्मा नारद के संवाद, प्रसंग को उन्हें सुनाते हैं।। 3
हिमालय गिरि पर नारद तप से, इन्द्र हो जाते हैं भयभीत।
काम को भेजा बाधा बनने, निराश हुआ वह मिली न जीत।। 4
नारद के मन गर्व हुआ, कामदेव का हुआ उपहास।
प्रसन्न हो अपनी विजय बताने, पहुँच गए वे तुरन्त कैलास।। 5
शिव माया मोहित नारद, वृतान्त सब शिव को सुनाते हैं।
मना किया शिव ने फिर भी, विष्णु को वह बतलाते हैं।। 6
माया रचकर विष्णु नारद, का अहंकार मिटाते हैं।
जिस कन्या को चाहते नारद, विष्णु उसको पाते हैं।। 7
काम से पीड़ित नारद विष्णु, को फटकार लगाते हैं।
स्त्री वियोग को पाओगे, ऐसा शाप सुनाते हैं।। 8
माया खींची विष्णु ने तब, नारद ने जाना अपना पाप।
विष्णु बोले दुःखी न होओ, करो शिवसहस्रनाम का जाप।। 9

ऐसा कहकर नारद को, विष्णु जी हो गए अन्तर्धान।
शिव में ध्यान लगाए नारद, ने किया ब्रह्म लोक प्रस्थान।। 10
दर्शन कर ब्रह्मा जी के, उनकी स्तुति का किया है गान।
बोले शिव माया से मोहित, मुझे नहीं शिव तत्व का ज्ञान।। 11
जग हितकारी बात है पूछी, ब्रह्मा के मन हुआ आनन्द।
सत् ही शेष था केवल तब, अनेक होने का उठा सङ्कल्प।। 12
वह ही सत् परब्रह्म है, वह ही सदा शिव हैं भगवान।
शक्ति को स्वयं से प्रकटाया, पूजता जिसको सारा जहान।। 13
वाम भाग से विष्णु प्रकटे, तप का उनको दिया आदेश।
तप में रत उनके शरीर से, निकली जलधाराएँ अनेक।। 14
जल में शयन किया इससे, नारायण नाम हुआ विख्यात।
चौबीस तत्व उनसे प्रकटे पर, न थी उनमें चेतनता व्याप्त।। 15
शिव इच्छा से विष्णु की नाभि से प्रकटा कमल विशाल।
शिव के दायें अंग से प्रकटे, ब्रह्मा को दिया उसमें डाल।। 16
उद्गम स्थल न ढूँढ सके तो, आकाश वाणी ने उचारा 'तप'।
आदेश समझ कर करी तपस्या, सहसा विष्णु जी हुए प्रकट।। 17
श्रेष्ठता को लेकर दोनों में, तब हुआ वाद-विवाद महान।
अग्निस्तम्भ के रूप में शिव ने, दोनों का दूर किया अज्ञान।। 18
ब्रह्मा को सृष्टि और पालन, का दिया विष्णु को आदेश।
मुझ से प्रकटे मेरे अंश हो, इस में नहीं संदेह का लेश।। 19
शिव जी बोले ब्रह्मा से, तुम से लेंगे रुद्र अवतार।
रूप वे मेरा ही होंगे, करेंगे सृष्टि का संहार।। 20
ब्रह्मा विष्णु रुद्र की संगिनी, सरस्वती लक्ष्मी और काली।
इन सब को मेरी शक्ति उमा, होंगी प्रकट करने वाली।। 21

ब्रह्मा विष्णु रुद्र ये देव, गुणों को करते हैं धारण।
पर मेरे भोले गुणातीत हैं, और सबके आदि कारण।। 22
लीला के लिए अलग हैं तीनों, वस्तुतः तीनों देव हैं एक।
जो तीनों में भेद न करता, उसको मिलती प्रभु की टेक।। 23
स्वयं को शिव का भक्त जो कहते हैं और विष्णु निंदा गाते है।
शिव जी कहते उनके पुण्य, तत्काल नष्ट हो जाते हैं।। 24
लिङ्ग की वेदी स्वरूप उमा का, लिङ्ग महेश्वर हैं साक्षात्।
शिवलिङ्ग के पूजक पर शिव की, कृपा की होती है बरसात।। 25
ब्रह्म, तप और जप यज्ञ से, ध्यान यज्ञ को श्रेष्ठ बताते हैं।
इससे शिव का दर्शन होता, पाप भी दूर हो जाते हैं।। 26
शिव पूजा में चढ़ाये फूल, भिन्न-भिन्न फल को देते हैं।
कामना के अनुरूप ही भक्त, पूजा में फूलों को लेते हैं।। 27
चौबीस तत्वों वाले अण्ड में, विष्णु ने प्रवेश किया।
उस में चेतनता आयी, हरि ने विराट् रूप लिया।। 28
विष्णु लोक वैकुण्ठ कहलाता, शिव का लोक है कैलास।
सत्यलोक में ब्रह्मा रहते, सृष्टि रचना का किया प्रयास।। 29
नौ प्रकार की सृष्टि की जो, प्राकृत वैकृत कहलाती है।
पर फिर भी ब्रह्मा की सृष्टि, आगे नहीं बढ़ पाती है।। 30
शिव शङ्कर की इच्छा से, दो भागों में ब्रह्मा हुए विभक्त।
एक भाग से मनु जी प्रकटे, दूजे से हुई शतरूपा प्रकट।। 31
मैथुनी सृष्टि के बने ये कारण, इनकी सन्तानों से भरा संसार।
सूत जी ने ऋषि मुनियों से, सृष्टि क्रम का कहा सब सार।। 32
शिव मन्दिर में दीपदान की, महिमा का किया वर्णन।
इस प्रसङ्ग में सूत जी ने, गुणनिधि की कथा कराई श्रवण।। 33

ब्राह्मण गुणनिधि अति व्यसनी, जुआरी और दुराचारी।
पिता यज्ञदत्त ने घर से निकाला, कभी भूख लगी उसको भारी।। 3
नैवेद्य चुराने के आशय से, एक शिव मन्दिर में आया।
अपने वस्त्र की बाती बनाकर, मन्दिर में दीपक है जलाया।। 35
इस सत्कर्म से मरने पर, वह ब्राह्मण बना कलिङ्ग राजा।
हर शिवालय में दीप जले, ऐसी दी उसने आज्ञा।। 36
जन्मान्तर में शिव की कृपा से, अलकापुरी को पाया है।
कुबेर का पद देकर उसको, शिव ने निज मित्र बनाया है।। 37
शिव मन्दिर में दीपदान की, महिमा को कैसे गाएँ।
इस सत्कर्म के करने वाले, शिव की भक्ति को पाएँ।।
दीप दान को करने वाले, शिव के लोक में जाएँ।। 38

॥ द्वितीय रुद्र संहिता - प्रथम सृष्टि खण्ड पूर्ण ॥

। गणेशाय नमः   श्री साम्ब सदाशिवाय नमः   श्री सीतारामाभ्याम् नमः

शिव-भक्ति-रस धारा

द्वितीय रुद्र संहिता

द्वितीय सती खण्ड

ब्रह्मा जी नारद को सती का पावन चरित सुनाते हैं।
उसी प्रसंग को श्री सूत जी, ऋषि मुनियों को बताते हैं।। 1
जब अत्रि आदि मानस पुत्रों, की ब्रह्मा जी ने की सृष्टि।
उनके मन से उसी समय, उत्पन्न हुई एक युवती।। 2
वे सब अपने हृदय में, उसको करना चाहते धारण।
उसी समय ब्रह्मा के मन से, काम का भी हुआ प्रकटीकरण।। 3
शिव को मोहित करने का ब्रह्मा ने उसे आदेश दिया।
हर प्रयास में विफल देख उसे, हुआ ब्रह्मा का दुःखी हिया।। 4
तब ब्रह्मा जी विष्णु जी को, मन की व्यथा बताते हैं।
शिवा ही शिव की पत्नी होंगी, विष्णु उन्हें समझाते हैं।। 5
ऐसा प्रयास करो ब्रह्मा जी, शिवा प्रसन्न हो जाये।
शिव को मोहित करने को, अवतार लेकर वे आयें।। 6
सरस्वती ब्रह्मा की पत्नी, विष्णु श्री पति कहलाते हैं।
रुद्र की पत्नि हेतु ब्रह्मा, माँ दुर्गा को रिझाते हैं।। 7
प्रसन्न हुई माँ दुर्गा से, ब्रह्मा निज इच्छा बताते हैं।
शिव की पत्नि बन जाओ, कल्याण इसी में पाते हैं।। 8
माँ बोली शिव परब्रह्म है, निर्गुणी और निराकारी।
कैसे स्वीकार करेंगे मुझको, मेरे मन चिन्ता भारी।। 9

शिव को मोहित करने में, समर्थ हो तुम ही माता।
हम में नहीं इतनी ताकत, विष्णु हों या मैं विधाता।। 10
मेरे पुत्र दक्ष की पुत्री, बनना तुम स्वीकार करो।
शिव की भार्या बन करके, सृष्टि के संकट को हरो।। 11
बोली दुर्गा दक्ष की पुत्री, बनकर के मैं आऊँगी।
अपनी तपस्या से कर मोहित, शिव को पति बनाऊँगी।। 12
घोर तपस्या कर के दक्ष ने, शिवा का दर्शन है पाया।
पुत्री रूप में आऊँगी सुन, दक्ष के मन आनन्द छाया।। 13
एक प्रतिज्ञा बताई अपनी, करोगे यदि मेरा अपमान।
मैं स्वतन्त्र हूँ सत्य है यह, तज दूँगी मैं अपने प्राण।। 14
दक्ष प्रजापति से यह कहकर, महेश्वरी हो गई अन्तर्धान।
देवी मेरी पुत्री होंगी, सोच के दक्ष को आनन्द महान।। 15
पञ्चजन प्रजापति पुत्री को, पत्नि रूप में किया स्वीकार।
उसके गर्भ से देवी शिवा के, प्रकट होने का मिला समाचार।। 16
दक्ष के संग सब देवी देवता, करते उमा की स्तुति का गान।
बाल्यकाल से ही वे हर पल, शिव के गुणों का करतीं बखान।। 1
युवावस्था में देख दक्ष ने, उसके विवाह का किया विचार।
पति रूप में शिव ही मिलें, नन्दाव्रत करना किया स्वीकार।। 18
उन की तपस्या देखने को, ब्रह्मा विष्णु सब देव आये।
भूरि-भूरि प्रंशसा की, कैलास गिरि को सब धाये।। 19
स्तुति कर ब्रह्मा विष्णु ने, मन की बात बताई है।
शिवा को अपनी पत्नि बनाओ, सब के लिए सुखदायी है।। 20
ब्रह्मा विष्णु सब देवों की, प्रार्थना की शिव ने स्वीकार।
प्रसन्न हो ब्रह्मा ने पुत्र दक्ष को, आ के सुनाया शुभ समाचार।। 21

विधि-विधान से ब्रह्मा जी ने, शिव का विवाह कराया है।
नृत्य हुआ संगीत हुआ, सब ने आनंद को पाया है।। 22
शिवा सहित बैठे हैं वृषभ पे, दक्ष से लीनी विदाई है।
अपने धाम में पहुँच के शिव ने, परम प्रसन्नता पाई है।। 23
परम कौतुकी शिव एकान्त में, सती के संग करते हैं विहार।
तृप्त हुई दाम्पत्य सुख से, बताया शिव को मन का विचार।। 24
परमतत्व का ज्ञान मुझे दें, जिससे हो सब का उद्धार।
प्रसन्न हो शिव ने उन्हें बताए, सगुण निर्गुण भक्ति के प्रकार।। 25
वृष आरूढ़ हो शिवा के संग, पृथ्वी पर कर रहे थे विचरण।
दण्डक वन में राम को देखा, नतमस्क हो किया नमन।। 26
पत्नि खोज में रोते हुए, युवक के प्रति इतना आदर।
देख के मोह में पड़ी सती ने, परीक्षा ली उन की जाकर।। 27
सीता का वेष बनाया तब भी, राम ने लिया उनको पहचान।
ब्रह्म रूप में देख उन्हें, पछतायीं अपनी गलती जान।। 28
परीक्षा का छिपाया भोले से, अन्तर्यामी गए सब जान।
मन ही मन त्यागा है उनको, बैठ गए वे लगा के ध्यान।। 29
उठे समाधि से शङ्कर तो, किया सती ने उनको नमन।
वाम भाग में नहीं बिठाया, सामने देते हैं आसन।। 30
एक बार दक्ष प्रजापति ने, कनखल में यज्ञ कराया है।
शिव विरोध के कारण उसमें, पुत्री को भी न बुलाया है।। 31
शिव से आज्ञा पा के सती ने, दक्ष यज्ञ में किया गमन।
शिव का भाग न देख प्राणों का, योग अग्नि में किया त्यजन।। 32
नारद ने आकर भोले को, सब वृतान्त सुनाया है।
जटा उखाड़ के वीरभद्र, महाकाली को प्रकटाया है।। 33

असंख्य गणों संग इन दोनों ने, दक्ष यज्ञ विध्वंस किया।
दक्ष को मार के उसके सिर को, यज्ञ अग्नि में डाल दिया।। 34
पुत्र विनाश से दुःखी हो ब्रह्मा, जाते हैं विष्णु के पास।
प्रणिपात ही समाधान है, हम सब चलते हैं कैलास।। 35
वट के वृक्ष के नीचे बैठे, मेरे शिव मङ्गल की खान।
ब्रह्मा विष्णु सब देवों ने, गाई उनकी स्तुति महान।। 36
हर्षित होकर भोले बोले, बताइये आने का कारण।
दक्ष अपराध को क्षमा करें, बनायें अपना कृपा भाजन।। 37
सब की विनती मान के शिव ने, यज्ञ को पूर्ण कराया है।
भस्म हुए सिर के कारण, बकरे का सिर लगवाया है।। 38
चेतना पाकर दक्ष ने शिव को, अपना शीश नवाया है।
परम दयालु शिव ने दक्ष के, अहंभाव को मिटाया है।। 39
शिव के भाग को देकर देव, गुण गाते गए अपने धाम।
ऐसे महिमावन्त प्रभु को, हम सब करते हैं प्रणाम।। 40

॥ द्वितीय रुद्र संहिता - द्वितीय सती खण्ड पूर्ण ॥

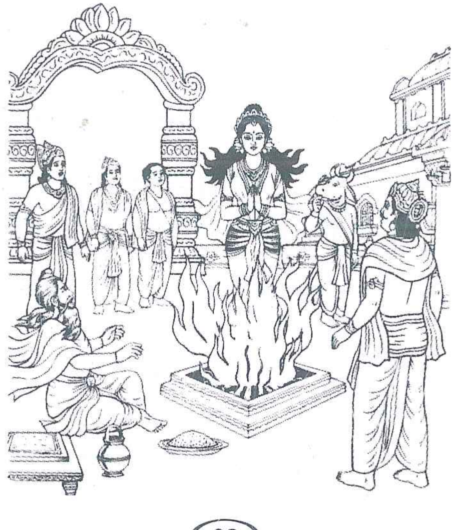

शिव-भक्ति-रस-धारा

द्वितीय रुद्र संहिता

तृतीय पार्वती खण्ड

हिमगिरि तप की पावन भूमि, भोले शङ्कर को वह भाता।
खान अनेकों रत्नों की वह, विष्णु का अंश कहा जाता।। 1
पितरों की पुत्री मेना संग, हिमगिरि करते अपना विवाह।
देह त्याग के सती को उनकी, पुत्री बनने की हुई चाह।। 2
देवों ने भी मिलकर के, उनकी स्तुति का किया है गान।
मेनका की पुत्री बन आओ, जिसमें हैं सब का कल्याण।। 3
जब से मैंने देह को त्यागा, शिव हैं विरह में अति व्याकुल।
उनको पत्नी सुख देने को, मेरा मन भी है आकुल।। 4
मेना की पुत्री बनकर, धरा पे लूँगी मैं अवतार।
देवो! तुम्हारा कार्य करूँगी, दुःखों का कर दूँगी संहार।। 5
हिमगिरि पत्नि मेना संग, करते तपस्या अति कठोर।
शिवा का दर्शन पाकर उनका, मन आनंद में हुआ विभोर।। 6
पुत्री रूप में आप को पायें, और हो पुत्र हमारे शत।
देवी ने स्वीकार किया, सब संकट हो गए उनके नष्ट।। 7
पहले सौ पुत्रों को पाया, फिर शिवा गर्भ में आयी हैं।
प्रकट हो संकट दूर करो, देवों ने स्तुति गायी है।। 8
प्रकट हुई आद्या शक्ति, सब के मन आनंद छाया है।
पुकारते उनको पार्वती, उमा भी नाम धराया है।। 9

नारद आकर उनकी हस्त, रेखा के फल को बताते हैं।
पति योगी निष्कामी सुनकर, हिमगिरि मेना दुःख पाते हैं।। 10
यह सब लक्षण शिव में हैं, समाधान यह सुनाया है।
शिव को पाने हेतु तपस्या करने को बतलाया है।। 11
गंगावतरण शिखर पर तप करने का भोले ने किया विचार।
हिमालय ने अपना सौभाग्य मान, किया उनका स्वागत सत्कार।।
शैलराज से बोले भोले, मेरे निकट कोई न आवे।
ऐसा प्रबन्ध करो हे गिरिवर, तप में बाधा न पावे।। 13
शिव आज्ञा से पार्वती, उनकी सेवा में रहती निमग्न।
प्रेम से उनकी पूजी करतीं, जिससे शिव हो जायें प्रसन्न।। 14
तारकासुर से पीड़ित देव, जाते हैं ब्रह्मा की शरण।
केवल शिव सुत के हाथों ही, हो सकता है इस का मरण।। 15
पार्वती शिव सेवा में हैं, देवो! ऐसा करो प्रयास।
सकाम भाव हो शिव के मन में, पूरी होगी तब ही आस।। 16
देवों ने सारा वृतान्त, इन्द्र को आके सुनाया है।
स्मरण किया है कामदेव का, रति सहित वो आया है।। 17
अजेय हो गया है तारक, ब्रह्मा जी से पाकर वर।
उत्पात मचा रखा है उसने, स्वर्ग लोक व धरती पर।। 18
शिव के सुत से ही यह मरेगा, ब्रह्मा से लिया यह वरदान।
शिवा में शिव की रूचि जगाओ, कीर्ति होगी तुम्हारी महान।। 1
बसन्त ने अपना प्रभाव दिखाया, काम ने छोड़े पुष्पों के बाण।
चित्त के विकृत होते ही, शङ्कर हुए मन में हैरान।। 20
नज़र पड़ी जब कामदेव पर, क्रोध से भर गए शिव तत्काल।
तृतीय नयन से ज्वाला प्रकटी, जो बन गई काम का काल।। 2

देवता पहुँचे शिव की शरण, देख रति का दुखद विलाप।
हुए प्रसन्न बोले भोले, द्वापर युग में होगा मिलाप।। 22
कामदेव जन्मेगा तब, कृष्णपुत्र प्रद्युम्न बन कर।
जब तक व्यापेगा सबमें, अनंग रूप में यह रहकर।। 23
काम को दग्ध किया शिव ने, पार्वती भी घबरायीं।
नारद के आदेश से वह, वन में तप करने आयी।। 24
स्तुति गाई देवों ने शिव की, हम सब के संकट को हरो।
करके पाणिग्रहण उमा का, तारक के दुःख से मुक्त करो।। 25
प्रसन्न हुए शिव ने स्वीकारा, देवता सब हर्षाते हैं।
पार्वती के तप की परीक्षा को, सप्तर्षि भिजवाते हैं।। 26
शिव की निंदा करके उन्होंने, पार्वती को किया भ्रमित।
पर वे कैसे विचलित होतीं, शिव में दृढ़ था उनका चित्त।। 27
शिव में दृढ़ अनुराग देख, सप्तर्षि मन में हर्षाते हैं।
आशीषें देकर गए कैलास, शिव को सब बतलाते हैं।। 28
उमा के तप की परीक्षा को, शिव विप्र वेष में आते हैं।
अपने मुख से अपनी बुराई, पार्वती को सुनाते हैं।। 29
शिव हैं दिगम्बर और विरुपाक्ष, पिशाचों संग विचरते हैं।
दक्ष की पुत्री सती त्याग अब, भस्म लपेटे फिरते हैं।। 30
शिव निंदा सुन पार्वती, ब्राह्मण को देती फटकार।
जाने लगी अन्यत्र तो शिव ने, असली रूप लिया है धार।। 31
तप से क्रीत दास हूँ तुम्हारा, तुम बिन नहीं रह पाऊँगा।
तुम को अपनी पत्नि बनाकर, कैलास गिरि ले जाऊँगा।। 32
मेरे पिता से मुझ को मांगो, शिव से विनय वो करती है।
ऐसा ही होगा यह सुनकर, घर की ओर चल पड़ती है।। 33

हर्षित हो सारा परिवार, करता है स्वागत सत्कार।
पार्वती की याचना करने, शिव आये नट वेष को धार।। 34
दिव्य लीलाएँ करने वाले, शिव को शिवा ने पहचाना है।
पार्वती की याचना की, गिरि मेना ने न माना है।। 35
अन्तर्धान हुए हैं शिव फिर, विप्र वेष में आये हैं।
अपनी निंदा कर हिमगिरि, मेना के मन भरमाये हैं।। 36
शिव द्वारा भेजे सप्तर्षि, उन दोनों को समझाते हैं।
शिवा सनातन पत्नि शिव की, दोनों को अभिन्न बताते हैं।। 37
सृष्टि सृजक, पालक लयकारक, शिव की महिमा सुनाते हैं।
अपनी कन्या शिव को देना, धन्यता उनकी बताते हैं।। 38
संदेह हिमगिरि का दूर हुआ, लग्न पत्रिका की प्रेषित।
बुलाये अपने बंधु-बांधव, होकर के मन में हर्षित।। 39
विश्वकर्मा ने हिमालय पुरी को, ऐसा अनुपम सजवाया है।
देवों के लिए दिव्यलोकों का निर्माण कराया है।। 40
भोले ने भी नारद द्वारा, देवों को बुलवाया है।
नंदी आदि सभी गणों को, संदेशा भिजवाया है।। 41
भोले की बारात हिमालय, पुरी के लिए करती प्रस्थान।
विप्रों ने अगवानी की, सबके मन आनंद महान।। 42
तब लीला करने को शिव ने, अद्‌भुत रूप बनाया है।
मेना देख के हो गई मूर्छित, सब में भय समाया है।। 43
चेत हुआ तो मेना बोली, हरगिज नहीं होगा यह विवाह।
उमा भले ही रहे कुआँरि, मुझ को नहीं कोई परवाह।। 44
तब देवों ऋषियों ने शिव और, शिवा की प्रभुता का किया बखान।
यह सब शिव की लीला जान के, दूर हुआ सब का अज्ञान।। 45

भेरी शंख नगाड़े बजे, नृत्य हुआ हुए मङ्गल गान।
हिमालय से बोले गर्गाचार्य, करना है अब कन्यादान।। 46
शिव और पार्वती का विवाह, हर्ष उल्लास से हुआ सम्पन्न।
विप्रों ने सादर करवाया, उन दोनों को ध्रुव दर्शन।। 47
हिमगिरि मेना हुए आकुल, कन्या की करनी विदाई है।
सप्तर्षियों ने उन दोनों को, शिव तत्व की महिमा बताई है।। 48
एक ब्राह्मणी ने पार्वती को, पतिव्रत धर्म का दिया उपदेश।
पत्नि रूप में उमा को पाकर, कैलास गिरि को गए महेश।। 49
कैलास पे शिव और पार्वती, आनन्द से करने लगे विहार।
शिव विवाह के वक्ता श्रोता, पर होती शिव कृपा अपार।। 50

॥ द्वितीय रुद्र संहिता का तृतीय पार्वती खण्ड पूर्ण ॥

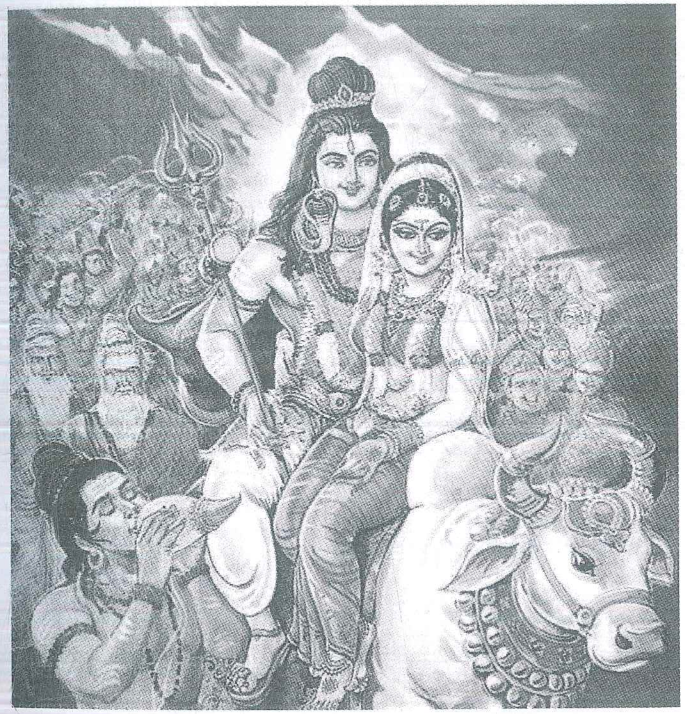

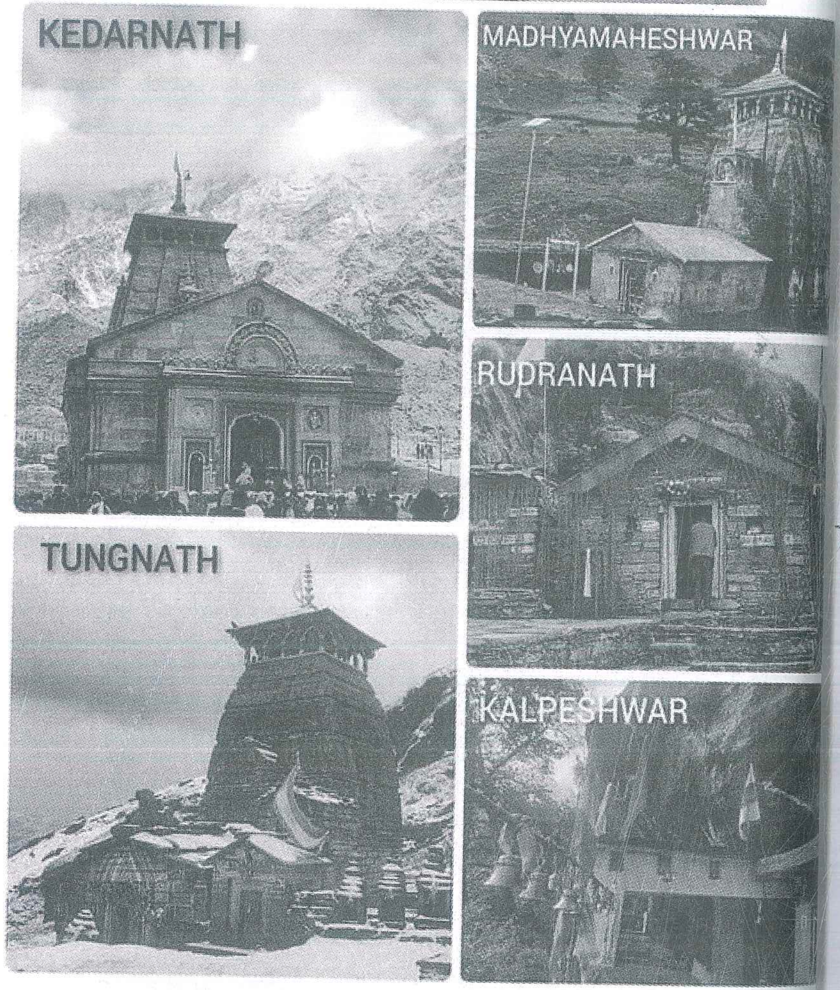

पंच केदार (उत्तराखण्ड)

शिव-भक्ति-रस-धारा

द्वितीय रुद्र संहिता

चतुर्थ कुमार खण्ड

सत्य के प्रेमी सत्य प्रदाता, ब्रह्मा विष्णु भी करें वन्दन।
त्रिकालाबाधित सत्ता वाले, शिव चरणों में मेरा नमन।। 1
शिवा से करके विवाह शिव जी, देवकार्य पर करते विचार।
उत्पाती तारक राक्षस को, मेरा पुत्र ही सकता मार।। 2
लोक धर्म में प्रवृत्त उनको, बीते दिव्य वर्ष हजार।
देवों के मन हुई चिन्ता, कैलास गए सब करके विचार।। 3
शोर हुआ शिव बाहर आए, शिवा सकी न तेज को धार।
सरपत वन में गिरे तेज ने, दिव्य शिशु का लिया आकार।। 4
अगहन मास के शुक्ल पक्ष की, षष्ठी तिथि का समय महान।
प्राकट्य हुआ शिव पुत्र का छः, कृत्तिकाएँ आयीं करने स्नान।। 5
सभी उसे पाना चाहती थी, उनमें हुआ विवाद महान।
छः मुख धार के बालक ने, सब के स्तन का किया है पान।। 6
उस को साथ ले कृत्तिकाओं ने, अपने लोक में किया गमन।
पुत्र की भाँति पोषण करके, वे सब रहतीं अति प्रसन्न।। 7
शिवा ने शिव से तेज का पूछा, देवों ने बतलाया है।
नन्दीश्वर को भेज पुत्र कार्तिकेय को शिव ने बुलाया है।। 8
पुत्र को पा शिव और शिवा, के मन में आनन्द भारी।
कैलास पे उत्सव हुआ महान, जिस की शोभा थी न्यारी।।। 9

सब देवों ने अस्त्र शस्त्र, और विद्या आदि करी प्रदान।
दीर्घायु का वर दे शिवा ने, मन में पाया आनन्द महान।। 10
देवों की विनती सुन शिव ने, अपने मन में करके विचार।
पुत्र को सौंप दिया देवों को, जिससे हो तारक संहार।। 11
विश्वकर्मा ने उस के लिए, किया सिंहासन का निर्माण।
हरि ने प्रेम से ब्रह्माण्ड का, अधिपति पद उन्हें किया प्रदान।। 12
कुमार को आगे कर देवों ने, युद्ध के लिए किया प्रस्थान।
तारकासुर भी बहुत बड़ी, सैना को लेकर पहुँचा आन।। 13
देवो! विजय तुम्हारी होगी, नभ वाणी ने उचारा है।
तब देवों ने निर्भय होकर, तारक को ललकारा है।। 14
ब्रह्मा के वर से हुआ अजेय, तारकासुर था महाबली।
देवों की कोई रणनीति, उसके आगे नहीं चली।। 15
बहुत भयङ्कर युद्ध हुआ, देवों दैत्यों में परस्पर।
रक्त की नदियाँ बहने लगी, और सिर गिरते कट कट कर।। 16
विष्णु इन्द्र और वीरभद्र ने, तारकासुर पर किये प्रहार।
पर उसके बल के आगे, व्यर्थ गए इनके सब वार।। 17
तब कुमार से बोले ब्रह्मा, कोई नहीं सकता इसको मार।
मैंने वर ऐसा ही दिया है, तुम से ही होगा संहार।। 18
कुमार को देख के तारकासुर ने, देवों को धिक्कारा है।
देवो! तुमने सदा से ही, छल का लिया सहारा है।। 19
मेरा तो कुछ न बिगड़ेगा, यह बालक मारा जायेगा।
बालक-वध का पाप हे देवो, तुम सब पर ही आयेगा।। 20
शिवा शम्भु को कर के नमन, कुमार ने किया शक्ति से प्रहार।
छिन्न-भिन्न अंगों वाला होकर, तारक गिर गया मार पछाड़।। 21

प्राण विहीन हुआ है तारक, देवता मन में हरषाये।
कुमार विजय की सूचना पाकर, गिरिजा शंभू भी आये।। 22
सब देवों ने स्तुतियाँ गाई और किया है अभिनंदन।
हर्षित होके कुमार शिवा संग, शिव ने किया कैलास गमन।। 23
सूत जी ऋषि मुनियों को अब, गणपति का चरित सुनाते हैं।
पार्वती की देह के मैल से, इनका जन्म बताते हैं।। 24
द्वार पे पहरा देते गणेश, पार्वती कर रही थी स्नान।
परम कौतुकी लीला प्रवीण, शिव जी द्वार पे पहुँचे आन।। 25
शिवा लाड़ले गणपति ने, शिव को वहीं पे रोक लिया।
क्रोध में भरकर भोले ने, गणों को युद्ध का आदेश दिया।। 26
ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि और सारे वे शिव के गण।
उस बालक को हरा न पाये, निराश हो गया उनका मन।। 27
इस घटना को जान शिवा ने, दो शक्तियों को प्रकटाया।
सब के शस्त्रों को खाने लगी वे, मर्म न कोई समझ पाया।। 28
भोले ने गणेश के सिर को काटा, सभी देवता हुए प्रसन्न।
कुपित शिवा ने प्रलय करने को, करोड़ो शक्तियाँ की उत्पन्न।। 29
भयभीत हुए सब ऋषि देवगण, शिवा की शरण में हैं आये।
क्षमा करूँगी मेरे पुत्र को, जीवित यदि तुम कर पाये।। 30
शिव आज्ञा से हाथी का सिर, उस की देह में जोड़ा है।
उस में चेतना लाने को, अभिमन्त्रित जल छोड़ा है।। 31
देख के जीवित अपने पुत्र को, माता शिवा है हरषायी।
शिव ने गणों का अध्यक्ष बनाया, प्रथम पूजा उनकी बतलाई।। 32
सूत जी ऋषि मुनियों को गणेश विवाह की कथा सुनाते हैं।
पहले विवाह जो पृथ्वी परिक्रमा कर पहले आते हैं।। 33

मात-पिता के वचनों को सुन, कार्तिकेय ने किया प्रस्थान।
गणपति ने एक युक्ति रची, वो थे बहुत ही बुद्धिमान।। 34
मात-पिता को बिठा आसन पे, सात परिक्रमा लगाई हैं।
पृथ्वी परिक्रमा सम फल इसका, जीत मैंने ही पाई हैं।। 35
बुद्धि के सागर गणेश का, शिव पार्वती ने विवाह किया।
पत्नियाँ सिद्धि बुद्धि जिन्होंने शुभ लाभ को जन्म दिया।। 36
कर परिक्रमा पृथ्वी की जब, कार्तिकेय लौट के आते हैं।
विवाहित देख गणेश को वे, क्रौञ्च पर्वत पे चले जाते हैं।। 37
मल्लिकार्जुन ज्योर्तिलिङ्ग रूप में, शिव जी वहाँ प्रतिष्ठित है।
जो यह कथा सुनाता पढ़ता, उसका कल्याण तो निश्चित है।। 38

॥ द्वितीय रुद्र संहिता चतुर्थ कुमार खण्ड पूर्ण ॥

शिव-भक्ति-रस-धारा

द्वितीय रुद्र संहिता

पञ्चम युद्ध खण्ड

नारद पूछते ब्रह्मा से शिव, त्रिपुरों को कैसे जलाते है।
उत्तर में बताया सनत्कुमार, ऋषि व्यास को जैसा बताते है।। 1
तारक वध जब हो गया उसके, तीनों पुत्रों ने किया तप।
ब्रह्मा जी का करके ध्यान, कई वर्षों तक किया है जप।। 2
उन के भयंकर तप को देख के, ब्रह्मा जी वहाँ हुए प्रकट।
अमरता जब माँगी असुरों ने, ब्रह्मा जी तब बोले स्पष्ट।। 3
भूतल पर जो जन्मा है, उसक निश्चित होगा मरण।
ऐसा हेतु माँग लो कोई, बहुत कठिन हो जिसका सृजन।। 4
सोना चांदी लोहे के, माँगे उन्होंने तीन नगर।
उनमें हमारा वास हो पर, किसी को आयें नहीं नज़र।। 5
तीनों पुर जब एक साथ हो, और धर्म का करे हम अतिक्रमण।
सर्व देवमय कोई देव, एक ही बाण से करे दहन।। 6
ऐसे देव तो केवल शिव है, उनका हम करते आराधन।
वे न कभी भी जलायेंगे, मृत्यु का अब नहीं कोई साधन।। 7
पाके प्रेरणा शिव जी की, ब्रह्मा जी तथास्तु कहते हैं।
आज्ञा पाकर मय दानव, तीनों पुरों को रचते हैं।। 8
त्रिलोकी में अनूठे पुरों में, उन तीनों ने किया प्रवेश।
सारे सुख वैभव थे उनमें, कमी नहीं थी कोई लेश।। 9

पतिव्रता थी नारियाँ और, वे सब शिव भक्ति करते।
तीनों लोकों में राज्य था उनका, देवता भी उनसे डरते।। 10
तब सब देवता ब्रह्मा के संग, विष्णु को व्यथा सुनाते हैं।
धर्म विमुख उन्हें करना होगा, ये ही उपाय बताते हैं।। 11
विष्णु आज्ञा से उन्हें नारद, मायामय शास्त्र पढ़ाते हैं।
उससे मोहित हो वे सारे, धर्म विमुख हो जाते हैं।। 12
देवों की स्तुति सुन शिवजी, त्रिपुर दहन को हुए तैयार।
विश्वकर्मा निर्मित सर्वदेवमय, रथ पर हुए मेरे भोले सवार।। 13
गणपति की पूजा करते ही, तीनों पुर हुए एकाकार।
शिव ने बाण से भस्म किया, देवों ने कीन्हीं जय जयकार।। 14
अब सनत् कुमार जी व्यास ऋषि को, जलन्धर वध का बताते हैं।
इन्द्र व बृहस्पति गए कैलास, सारा प्रसङ्ग सुनाते हैं।। 15
शिव दर्शन को दोनों ने, कैलास की ओर किया प्रस्थान।
रास्ता रोके शिव है खड़े पर, वे न सके उनको पहचान।। 16
घमण्डी इन्द्र ने क्रोध में भरकर, हाथ में व्रज्र उठाया है।
करके स्तम्भित शिव ने अपना रौद्र रूप दिखलाया है।। 17
देख के तृतीय नेत्र का तेज, बृहस्पति ने उन्हें पहचान लिया।
क्षमा माँगने हेतु इन्द्र को, शिव चरणों में डाल दिया।। 18
स्तुतियों से होकर प्रसन्न, शिव जी उनसे कहते हैं।
तेज नेत्र का होगा न वापिस, क्षार समुद्र में फेंकते हैं।। 19
शङ्कर के नेत्र के तेज ने, बालक का ले लिया आकार।
ऊँचे स्वर में जब वह रोया, त्रिलोक में मच गया हाहाकार।। 20
व्याकुल होकर सारे देवता, ब्रह्मा जी की गए शरण।
समुद्र ने अपना पुत्र बताया, किया ब्रह्मा ने नामकरण।। 21

ब्रह्मा बोले इसने मेरे नेत्र के जल को किया धारण।
जलन्धर नाम से होगी प्रसिद्धि, मारे इसे न कोई साधन।। 22
कालनेमि की पुत्री वृन्दा, के संग उसका हुआ लग्न।
गुरु शुक्राचार्य के प्रभाव से, शासन करता होके मगन।। 23
राहू का सिर किसने काटा, शुक्राचार्य बताते हैं।
इसी प्रसङ्ग में सागर मंथन, की सब कथा सुनाते हैं।। 24
पिता समुद्र के रत्न है छीने, अमृत देवों को पिलाया है।
विष्णु ने राहू का सिर काटा, सुन के वह बौखलाया हैं।। 25
देवों से युद्ध करने को, निकला सेना ले भारी।
शुम्भ-निशुम्भ को साथ लिया, पाताल की सेना भी सारी।। 26
मृत दैत्यों को जिलाते शुक्राचार्य संजीवनी द्वारा।
इधर बृहस्पति की युक्ति से, देव न जाये कोई मारा।। 27
जलन्धर ने कारण पूछा तो शुक्राचार्य बताते हैं।
द्रोणगिरि से औषधि लाकर, देवगुरू देवों को जिलाते हैं।। 28
दैत्यराज ने द्रोण गिरि को, उखाड़ समुद्र में डाल दिया।
मेरू गुफा में भागे देवता, जब गुरू ने आदेश किया।। 29
देवों की यह देख के हालात, विष्णु युद्ध करने जाते हैं।
जलन्धर तो था रुद्र का अंश, उसे हरा न पाते हैं।। 30
भयभीत हुए तब सारे देवता, शिव भोले की लेते शरण।
शिव से प्रकट हुई कृत्या, असुरों का करने लगी भक्षण।। 31
नन्दीश्वर कार्तिकेय गणेश, वीरभद्र व शिव के गण।
शुम्भ-निशुम्भ कालनेमि जलन्धर, के संग करते भयंकर रण।। 32
देख पार्वती पीड़ित काम हो, जलन्धर ने धारा शिव वेष।
गौरी अन्तर्धान हुई और, विष्णु को देती आदेश।। 33

इस का ही अनुसरण करो, जैसे किया है इसने छल।
भंग करो वृन्दा का सतीत्व, क्षीण होगा तब इसका बल।। 34
जलन्धर रूप में तब विष्णु, समक्ष वृन्दा के आते हैं।
आलिङ्गन कर वृन्दा का, उसको सुख पहुँचाते है।। 35
पहचान के विष्णु को वृन्दा ने, कुपित होकर के शाप दिया।
उस का तेज गौरी में समाया, स्वयं को चिता में दहन किया।। 36
चक्र सुदर्शन से शङ्कर ने, जलन्धर का सिर काट दिया।
उस की देह से निसृत तेज, शङ्कर में ही समाये गया।। 37
दूर हुआ भय देवों का, त्रिलोकी में शान्ति छाई।
हर्षित होकर देवों ने, शिव की स्तुतियाँ है गाईं।। 38
कश्यप के पौत्र दानव दम्भ, तप करके पुत्र को पाते हैं।
राधा शापित गोप सुदामा ही, सुत बन शंखचूड़ कहाते है।। 39
शंखचूड़ ने करके तपस्या, मङ्गलमय कृष्ण कवच पाया।
देवता मुझ को कभी न जीते, यह वर पाकर हर्षाया।। 40
धर्मध्वज पुत्री तुलसी से, ब्रह्मा ने कराया उसका विवाह।
दैत्यों का अधिपति बनकर, देवों से करी है युद्ध की चाह।। 41
रथारूढ़ हो सेना लेकर, देवों संग युद्ध करता भारी।
सब देवों को मार भगाया, त्रिलोकी वश में की सारी।। 42
पूर्व जन्म में कृष्ण सखा था, कृष्ण भक्ति में रहता लीन।
विष्णु शरण सब गए देवता, होकर अधिकारों से हीन।। 43
विष्णु बोले शिव का त्रिशूल ही, इसकी मृत्यु का साधन।
देवो! शिव के लोक में जाओ, शिव का करो तुम आराधन।। 44
ब्रह्मा विष्णु संग सारे देवता, रुद्र शरण में जाते है।
शंखचूड के उत्पातों का, सब वृत्तान्त सुनाते हैं।। 45

देवों का राज्य लौटा दो, रुद्र ने दूत भिजवाया है।
नहीं तो युद्ध करना होगा, शंखचूड़ को युद्ध ही भाया है।। 46
तब देवों और दैत्यों में, भयंकर युद्ध हुआ भारी।
वीरों के सिर कट कट गिरते, रणभूमि रक्तरंजित सारी।। 47
देव पक्ष में स्कन्द वीरभद्र, नन्दीश्वर व शिव के गण।
दैत्यों का सिर काटती काली, और करती उनका भक्षण।। 48
काली असुरों को खाने लगी तो नभवाणी ने उचारा है।
शंखचूड़ तो अवध्य है, काली ने शिव को पुकारा है।। 49
शिव शंखचूड़ में युद्ध हुआ, नभवाणी ने कहे ये वचन।
कृष्ण कवच व सतीत्व स्त्री का, करते शंखचूड़ का रक्षण।। 50
तब विष्णु ने उस कवच को पाया, विप्र वेष का करके वरण।
शंखचूड़ का रूप बना, तुलसी के शील का किया हरण।। 51
रतिकाल में भेद देख के, तुलसी देती विष्णु को शाप।
छल मे मेरा पति मरवाया, रूप धरो पाषाण का आप।। 52
विष्णु स्मरण से शङ्कर आये, तुलसी की चिन्ता दूर करी।
देह तुम्हारी नदी गण्डकी, शालिग्राम की शिला बनेंगे हरि।। 53
तुम तुलसी का शालिग्राम से, जो भी संयोग करायेगा।
मेरे भाले कहते वो प्राणी, भुक्ति मुक्ति को पायेगा।। 54
इतनी शिव महिमा सुनकर भी, नारद तृप्ति न पाते हैं।
होके हर्षित ब्रह्मा जी, अन्धकासुर कथा सुनाते हैं।। 55
एक बार परिहास में गौरी ने, शिव नेत्रों को बन्द करा।
शिव ललाट स्थित अग्नि की गर्मीसे, उनके हाथों से स्वेद गिरा।। 56
उसने नेत्रहीन विकृत मुख, बालक का है लिया आकार।
मुझसे जन्मा है यह अन्धक, पुत्र मान उसे करती प्यार।। 57

पुत्रेच्छा से हिरण्याक्ष ने, शिव दर्शन हेतु तपस्या करी।
प्रसन्न हो प्रकटे शिव ने पुत्र, अंधक दे उसकी चिन्ता हरी।। 58
सब देवों पे विजय पाई, धरा को ले के गया पाताल।
पृथ्वी रक्षण हेतु विष्णु, बन के वराह भये उसके काल।। 59
अन्धक को अब राज्य मिला, भाइयों ने किया उसका उपहास।
यह अंधा क्या राज्य करेगा, तप हेतु निकला होके निराश।। 60
दस हजार वर्ष निराहार रह, मन्त्र का करता रहा वो जप।
एक साल तक देह के मांस को, अग्नि में डाल किया है तप।। 61
अस्थि मात्र जब रह गया शेष, ब्रह्मा ने तप से विरत किया।
उसकी देह को सुडौल बनाया, नेत्रों में प्रकाश दिया।। 62
अमर नहीं हो सकते तुम, माँगो मौत का कोई कारण।
सर्वश्रेष्ठ माँ सम नारी पर, कुदृष्टि हो मृत्यु का साधन।। 63
अपने पराक्रम से उसने, त्रिलोकी पर किया अधिकार।
हुआ काम पीड़ित वो शिव संग, बैठी पार्वती को निहार।। 64
पार्वती को जब माँगा तो, शिव ने उससे युद्ध किया।
उसका हृदय करके विदीर्ण, त्रिशूल पे उसको टांग दिया।। 65
टंगे-टंगे शिव की 108 मूर्तियों का किया निरन्तर ध्यान।
प्रसन्न हुए शिव जी ने उसको, गाणपत्य पद किया प्रदान।। 66
अब ब्रह्मा जी नारद को, बाणासुर की कथा सुनाते है।
शिव प्रसन्न कर उनसे हजार, भुजाएँ पाई बताते हैं।। 67
पर वह हो गया बहुत घमण्डी, शिव से ही करना चाहता युद्ध।
शीघ्र घमण्ड तोड़ेगा तेरा कोई, शिव बोले होकर के क्रुद्ध।। 68
पार्वती की इच्छा से, उषा अनिरुद्ध का हुआ मिलन।
बाण को पुत्री उषा का यह, दुष्कृत्य न हुआ सहन।। 69

द्वितीय रुद्र संहिता - पञ्चम युद्ध खण्ड

कृष्ण प्रपौत्र अनिरुद्ध को, नागपाश से बांध लिया।
सूचना पाकर नारद जी से, कृष्ण ने उनसे युद्ध किया।। 70
शिव इच्छा से काटी भुजाएँ, छोड़ी बस केवल अब चार।
सारंग धनुष को लेके ज्यों ही, सिर छेदन को हुए तैयार।। 71
शिव ने रोका भक्त है मेरा, हरो नहीं तुम इसके प्राण।
ण के ताण्डव नृत्य से खुश हो, गणपति पद उसे किया प्रदान।। 72
महिषासुर सुत गजासुर ने, तप कर ब्रह्मा से पाया वर।
देवों की सब सम्पति भोगूं, कालजयी से ही सकूँ मैं मर।। 73
उससे पीड़ित देवों ने, शिव से किया व्यथा का बखान।
त्रिशूल से शिव ने उसको मारा, उसने किया उनका गुणगान।। 74
प्रसन्न हो उसकी देह लिङ्ग बनाई, नाम दिया कृतिवासेश्वर।
गजासुर चर्म को किया है धारण, जो शिव रहते थे दिगम्बर।। 75
प्रह्लाद के मामा दुन्दुभि निर्ह्लाद ने, विप्रवध हेतु किया काशी गमन।
व्याघ्र रूप को करके धारण, विप्रों का करता भक्षण।। 76
सताया जब शिव भक्त विप्र को, प्रकटे शिव लिया काँख में दाब।
सिर पर मुष्टि प्रहार किया, मुनि आए सुन के रुदन का नाद।। 77
व्याघ्रेश्वर लिङ्ग का रूप लिया, अपने भक्तों का किया रक्षण।
जो यह चरित्र पढ़े व सुनाये, उसकी कीर्ति का हो वर्धन।। 78
विदल उत्पल दो दैत्यों को, पार्वती ने कन्दुक से मारा।
मार के दैत्यों को कन्दुक ने, लिङ्ग के रूप को है धारा।। 79
दोष निवारक उस लिङ्ग ने, कन्दुकेश्वर नाम धराया है।
रुद्र संहिता के वक्ता श्रोता ने, मनवांछित फल पाया है।। 80

॥ द्वितीय रुद्र संहिता पंचम युद्ध खण्ड पूर्ण ॥

श्री शिवमहापुराण पूर्वार्ध सम्पूर्ण

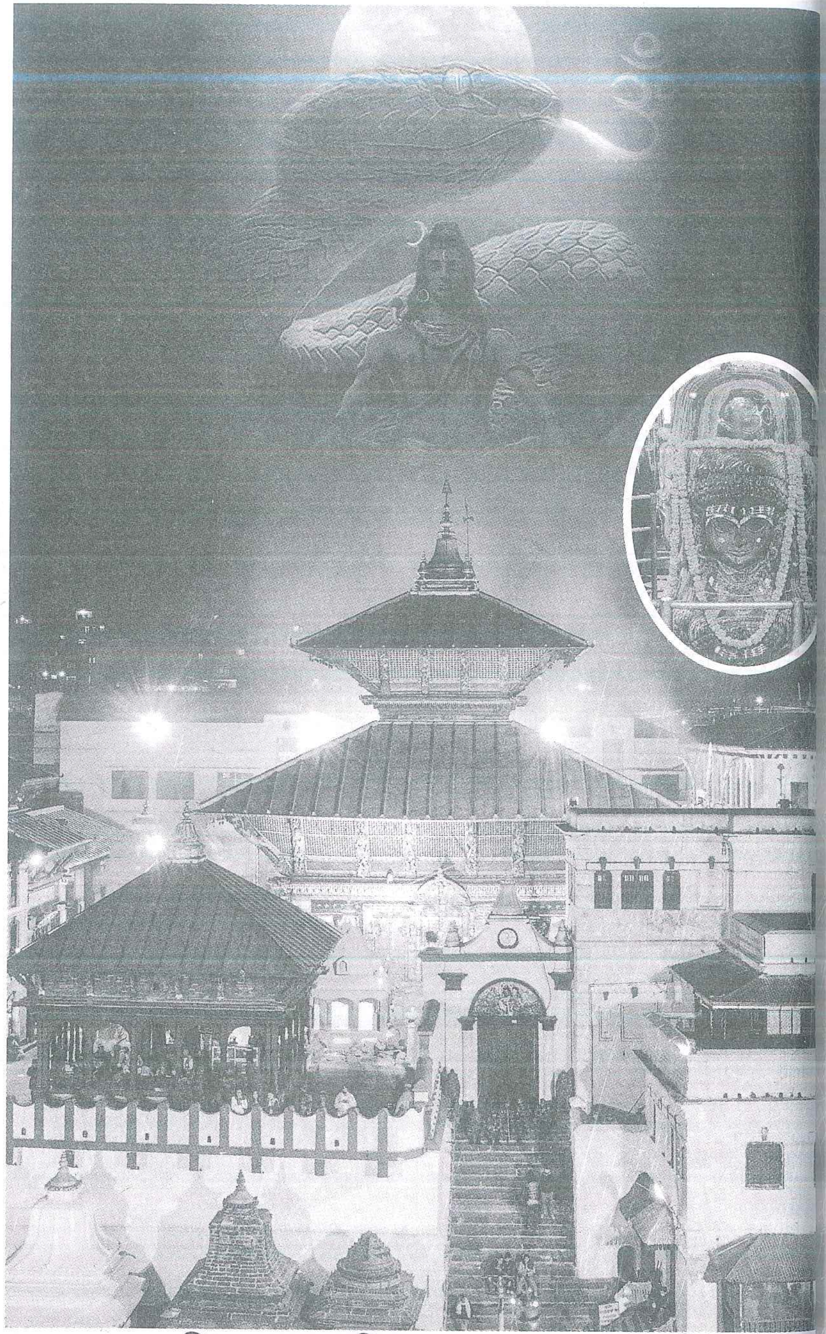

पशुपतिनाथ मन्दिर काठमाण्डू (नेपाल)

शिव-भक्ति-रस-धारा

तृतीय शत रुद्र संहिता

स्कन्द गणेश के उत्पत्ति कर्ता और आनन्द के हैं जो धाम।
गौरी प्रिय आदिदेव महेश्वर, शङ्कर को मेरा प्रणाम।। 1
सूत जी से ऋषि शौनक बोले, व्यास शिष्य हे दया निधान।
शिव अवतारों की कथा सुनाएँ, जो करती सब का कल्याण।। 2
नन्दीश्वर ने सनत् को सुनाया, वही सुनो तुम धर के ध्यान।
श्वेत लोहित उन्नीसवें कल्प में, सद्योजात अवतार महान।। 3
अन्य कल्पों में ईशान वामदेव, तत्पुरुष और अघोर अवतार।
इन पांचों की कर के वन्दना, प्राणी होता भव से पार।। 4
शर्व रुद्र भव उग्र भीम, महादेव पशुपति ईशान।
शिव की इन अष्टमूर्तियों में ही, समाया है ये सारा जहान।। 5
मैथुनी सृष्टि में असमर्थ, ब्रह्मा जी तप करते है।
अर्धनारीश्वर रूप धार के, शिव उनका दुःख हरते है।। 6
सूत जी बोले नन्दीश्वर जी, सनत् कुमार को बताते हैं।
कैसे उन्होंने शिवत्व को पाया, सारी कथा सुनाते हैं।। 7
शालंकायन सुत शिलाद ने, तप किया दिव्य वर्ष हजार।
महादेव जी हुए प्रसन्न, दर्शन दिया होके साकार।। 8
वर में अमर अयोनिज सुत का, देना किया शिव ने स्वीकार।
कहलायेगा यह जग में, मेरा नन्दीश्वर अवतार।। 9
शिव प्रेरित मित्र वरुण मुनि ने, अल्पायु मुझे बताया है।
करने लगे विलाप पिता जब, धीरज मैंने बंधाया है।। 10

मृत्यु को मैं जीतूंगा, महादेव का कर के भजन।
वन में एकाग्रचित्त हो मैंने, रुद्र मन्त्र का किया जपन ।। 11
पार्वती संग शिवजी आए, पहनाई कमलों की माल।
शिव सम मेरा रूप हुआ, गणाधिप बुलवाये तत्काल।। 12
इन्द्र सहित सब देवता आये, पाकर के शिव का आदेश।
गणाधिपों के अधिपति पद पर, ब्रह्मा ने किया मेरा अभिषेक।। 1
शिव आज्ञा से देवों ने मेरा, विवाह भी सम्पन्न करवाया।
पत्नी रुप में मरुत की कन्या, सुयशा को मैंने पाया।। 14
शिव और पार्वती ने हम दोनों को यह वरदान दिया।
संग हमारे सदा रहोगे, अपनी भक्ति को प्रदान किया।। 15
भैरव भी अवतार हैं शिव के, काल भैरव कहलाते हैं।
शङ्कर के गृहपति अवतार की, सूत जी कथा सुनाते हैं।। 16
विश्वानर मुनि शाण्डिल्य गोत्री, ब्रह्म तेजस्वी जितेन्द्रिय।
शैवाचार में अति प्रवीण, और हैं शिव जी के भक्त प्रिय।। 17
पत्नि शुचिष्मती बोली, चाहिए मुझे पुत्र शिव के समान।
शिव की आज्ञा मान के उसको, काशी नगरी पहुँचे आन।। 18
वीरेश्वर लिङ्ग की करी भक्ति, किया कठिन तप एक वर्ष।
प्रकटे बालक रूप में भोले, मुनि ने पाया अपार हर्ष।। 19
अभिलाषाष्टक स्तोत्र को गाया, बोले भोले होके प्रसन्न।
शुचिष्मती के गर्भ से मैं ही, पुत्र रूप में लूँगा जन्म।। 20
जन्म लिया जब बालक ने, गगन से बरसे सुगन्धित सुमन।
बजी दुन्दुभि दिशाएँ निर्मल, देव ऋषि सब हुए प्रसन्न।। 21
नवें वर्ष में गृहपति आए, नारद जी का हुआ आगमन।
बारहवें वर्ष में मृत्यु होगी, अग्नि बिजली होगी कारण।। 22

बोले गृहपति डरो नहीं, मृत्युञ्जय का करूँगा आराधन।
महाकाल को जीतूँगा मैं, कहता हूँ यह सत्य वचन।। 23
काशी पहुँचकर विश्वेश्वर का, दर्शन कर के किया प्रणाम।
शिवलिङ्ग स्थापित कर पूजा, करते जपते शिव का नाम।। 24
गौरी संग प्रकटे हैं भोले, अग्नि का पद किया प्रदान।
अग्नीश्वर यह लिङ्ग कहलाये, पूजा का फल होगा महान।। 25
यक्षेश्वर का रूप धार के, देवों का दूर किया अहंकार।
अब नन्दीश्वर वर्णन करते, शिव के प्रमुख जो दस अवतार।। 26
कश्यप पत्नि सुरभि के गर्भ से, लेके एकादश रुद्र अवतार।
बने सहायक देवों के, उन के संकट का किया संहार।। 27
जग में लेके शिव जी ने, दुर्वासा हनुमत अवतार।
धर्म ज्ञान की अलख जगाई, प्रभु राम के कारज दिये संवार।। 28
दधीचि ऋषि के अंश से, हुआ शिव का पिप्पलाद अवतार।
बने वह शिव के भक्तों की, शनि पीड़ा के निवारण हार।। 29
वैश्य नाथ अवतार लिया, महानन्दा वेश्या के कारण।
उसकी शिव भक्ति को परखा, छुड़ाये उस के भव बन्धन।। 30
द्विजेश्वर अवतार को लेके, नृप भद्रायु को सुखी किया।
धर्म में सच्ची निष्ठा देख के, अपनी भक्ति का दान दिया।। 31
भिल्ल दम्पति की शिव भक्ति का, यति बनकर किया परीक्षण।
फिर हंस रूप को धार के नल, दमयन्ती का कराया मिलन।। 32
इक्ष्वाकुवंशी नभग पे कृपा की, सुनकर उसके सत्य वचन।
कृष्ण दर्शन अवतार रूप में, साक्षात् दिये शिव ने दर्शन।। 33
वेष अवधूत का धर भोले ने, इन्द्र का मान किया मर्दन।
भिक्षुवर्य अवतार को लेके, विदर्भ वंशज का किया रक्षण।। 34

उपमन्यु पे अनुग्रह के हित सुरेशावतार को धार लिया।
देख की उसकी सच्ची निष्ठा, मनोरथ उस का पूर्ण किया।। 35
शिवा प्रेम को परखने हेतु, ब्रह्मचारी का रूप धरा।
द्विज बन अपनी निंदा की, नट बन करके नृत्य करा।। 36
अपने अंश से द्रोण के सुत अश्वत्थामा रूप में लिया अवतार।
किया विरोध पांडवों का पर, उनका कुछ न सके बिगाड़।। 37
कृष्ण और व्यास की आज्ञा से, अर्जुन करते शिव आराधन।
किरातेश्वर बन भोले असुर से, अर्जुन का करते रक्षण।। 38
प्रसन्न हुए अर्जुन के तप से, अस्त्र पाशुपत किया प्रदान।
इस आख्यान को पढ़ सुन करके, जीव का होता है कल्याण।। 3
अब नन्दीश्वर शिव के द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का करते वर्णन।
सौ अवतारों वाली शत, रुद्र संहिता हुई सम्पन्न।। 40

॥ इति शत रुद्र संहिता पूर्ण ॥

शिव-भक्ति-रस-धारा

चतुर्थ कोटि रुद्र संहिता

निर्विकार शिव निज माया से, विराट् विश्व का धरते आकार।
शैलजा संग में शोभित है, मङ्गल करें शिव करुणा अवतार।। 1
सूत जी से ऋषिगण हैं बोले, शिवलिङ्गों का करें वर्णन।
शिव अवतारों का किया श्रवण, पर नहीं तृप्त हुआ है मन।। 2
सूत जी बोले शिव स्वरूप है, जो कुछ भी है धरती पर।
लिङ्गमय है सारी पृथ्वी, लिङ्ग असंख्य हैं ऋषिवर।। 3
मुख्य मुख्य लिङ्गों को मैं, तुम को श्रवण कराता हूँ।
मुख्य द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों की, महिमा भी बताता हूँ।। 4
अत्रि ऋषि की कठिन तपस्या, अनुसूया का शिव आराधन।
अत्रीश्वर लिङ्ग प्राकट्य का, ये ही बने दोनों साधन।। 5
सूत जी नन्दिकेश्वर लिङ्ग की महिमा मुनियों को सुनाते हैं।
इसके दर्शन से ब्रह्म हत्या पाप से भी मुक्ति पाते हैं।। 6
विप्रसुता पतिव्रता - ऋषिका के पति का हुआ निधन।
शिवलिङ्ग पूजन में उसने, कर दिया निज तन मन अर्पण।। 7
कामबाण से पीड़ित मूढ़, असुर ने कहे उसे दुर्वचन।
शिव परायणा ऋषिका ने, शिव शिव कहकर ली शिव की शरण॥ 8
भक्त वत्सल भोले हैं प्रकटे, मूढ़ दैत्य के हर लिए प्राण।
भक्ता निर्मित पार्थिव लिङ्ग में, प्रवेश किया पूर्णांश से आन।। 9
नन्दिकेश्वर नाम से लिङ्ग ने, जग में ख्याति को पाया।
सारे पाप विनष्ट हैं होते, जो भी दर्शन को आया।। 10

गोकर्ण क्षेत्र के महाबलेश्वर, शिवलिङ्ग की महिमा है महान।
चारो युगों में अलग-अलग, रंगों से पाता यह पहचान।। 11

इसका पूजक महापापी भी, शिव के पद को पाता है।
चाण्डाली ने शिव लोक को पाया, ऐसा वर्णन आता है।। 12

इस शिवलिङ्ग में भोले बाबा, महाबल नाम से करते निवास।
रावण द्वारा स्थापित यह लिङ्ग, पूर्ण करता सब की आस।। 13

पीठ रूप से पार्वती ने, जिस शिवलिङ्ग को किया धारण।
इस हाटकेश्वर लिङ्ग का पूजक, शिव की कृपा का हो भाजन।। 1

समुद्रगर्त के अंधक दैत्य से पीड़ित था सब संसार।
देवों से प्रार्थित हो शिव ने, वध करने का किया विचार।। 15

लिया पिरो त्रिशूल में उसको, पर वह करता शिव स्तुति गान।
भक्ति दे उसे गर्त में फेंका, वहीं धरा लिङ्ग रूप महान।। 16

अन्धकेश्वर लिङ्ग कहलाया वो, पूजे उसको जो छः मास।
शिव के भक्त उस प्राणी की, पूरी हो जाती सब आस।। 17

सूत जी अब द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों की कथा सुनाते हैं।
सोमनाथ कहे गए प्रथम, माहात्म्य उस का बताते हैं।। 18

दक्ष ने निज 27 कन्यायें, चन्द्रमा को थी करी प्रदान।
विषम व्यवहार किया उनसे, रोहिणी पे आसक्ति महान।। 19

दक्ष ने रोका बार-बार, ऐसा करने से होता पाप।
चन्द्र न माने दक्ष ने उसको क्षय रोग का दे दिया श्राप।। 20

देवों ऋषियों के कहने से, गए चन्द्रमा तीर्थ प्रभास।
दस करोड़ की संख्या में मृत्यञ्जय मंत्र का किया है जाप।। 21

प्रसन्न होकर के प्रकटे भोले, बोले चन्द्रमा मांगो वर।
क्षय रोग मेरा दूर करो, करो निवास सदा यहाँ पर।। 22

कलाएँ घटें क्रमशः एक पक्ष में, दूजे में बढ़े क्रमशः निरन्तर।
सोमेश्वर नाम से हुए विख्यात, प्रभास क्षेत्र में शिव शङ्कर।। 23

धरती परिक्रमा कर लौटे, गणेश विवाह का पता पड़ा।
क्षुब्ध हुए तब कार्तिकेय, क्रौञ्चगिरि प्रस्थान करा।। 24

पुत्र वियोग से दुःखी शिवा शिव, करते पुत्र के पास गमन।
क्रौञ्चगिरि में हुए विराजित, ज्योति रूप कर के धारण।। 25

मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्ग नाम से त्रिलोकी में हुआ विख्यात।
जो इस लिङ्ग का दर्शन करता, कष्ट न आते उसके पास।। 26

महाकालेश्वर तृतीय ज्योतिर्लिङ्ग की अब कथा सुनाते हैं।
अवन्ती नगरी शिव को प्यारी, उसी में स्थित यह बताते है।। 27

एक ब्राह्मण परिवार सदा, शिव पूजा में ही रहता संलग्न।
नित्य अग्नि होत्र व पार्थिव लिङ्ग का करता वो पूजन।। 28

दूषण नाम के दुष्ट दैत्य ने, शिव धर्म छोड़ने को बोला।
पर वे शिव के आश्रित हो गए, तनिक न मन उनका डोला।। 29

मारने लगा दूषण जब उनको, पार्थिव ने गड्ढे का रूप धरा।
प्रकटे उससे महाकाल शिव, और दूषण का वध है करा।। 30

विप्रों से प्रार्थित शिव ने, उस गड्ढे में किया निवास।
महाकालेश्वर लिङ्ग नाम से, इस धरती पे हुआ विख्यात।। 31

इसका दर्शन प्राणियों के, सब दुःखों को हरता है।
मनोरथ पूरे होते उसके जो, इस लिङ्ग की उपासना करता है।। 32

देवर्षि ने जब विन्ध्य को, सुमेरू से छोटा बतलाया।
दुःखी विन्ध्य ओङ्कारेश्वर शिव की शरण में है आया।। 33

पार्थिव मूर्ति कर के स्थापित, करने लगा शिव आराधन।
हुए प्रसन्न प्रकटे भोले, किया विन्ध्य का मन भावन।। 34

देवो ऋषियों की विनती सुन, उस पार्थिव में हो गए स्थित।
प्रणव में ओंकारेश्वर नाम, पार्थिव में परमेश्वर प्रसिद्ध।। 35
नर नारायाण की शिव भक्ति से, प्रसन्न हुए जब परमेश्वर।
हिमाच्छादित केदारखण्ड में, निवास करें यह माँगा वर।। 36
केदारेश्वर नाम से, भोले हो गए वहाँ पे स्थित।
पूजक पापमुक्त होकर के, पा जाता फल मनवांछित।। 37
सहस्र वर्ष तप करके भीम ने, बह्मा को प्रसन्न किया।
अप्रतिम बली हो जाने का, ब्रह्मा से वरदान लिया।। 38
अतुल बली उस दुष्ट भीम ने, सब देवों को जीत लिया।
शिव भक्त कामरूपेश्वर को भी, हरा के बेड़ियों से बाँध दिया।। 3
पार्थिव लिङ्ग बनाकर, शिव की पूजा करते राजा रानी।
दुष्ट भीम ने उसी लिङ्ग पर, प्रहार करने की ठानी।। 40
अभी तलवार छू भी न पाई, भोले ने आके दर्शन दिया।
बोले भक्तो का रक्षक हूँ, हुँकार से उसको भस्म किया।। 41
ऋषियों की विनती सुन शिव ने, उस पार्थिव लिङ्ग में किया निवास
भीम शङ्कर ज्योतिर्लिङ्ग कहलाया, दर्शन से पूरी होती आस। 42
निर्गुण शिव ने नगर रचा, पांच कोस जिसका परिमाण।
ब्रह्माण्ड से रखा इसको अलग, यह काशी करे लोक कल्याण।। 4
सृष्टि का जब लय हो जाता, काशी का होता नहीं संहार।
त्रिशूल पे धारण करते तब शिव, नई सृष्टि में देते उतार।। 44
वाराणसी यह गुह्य स्थल है, सब जीवों को मिलती मुक्ति।
अविमुक्त यह क्षेत्र कहलाता, शिव से उसने की विनती।। 45
अम्बा सहित आप यहीं रहें, जिससे होगा लोकोपकार।
इस काशी विश्वेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग की महिमा बड़ी अपार।। 46

गौतम ऋषि व पत्नि अहिल्या, ब्रह्म गिरि पर करते निवास।
वरूण देव को करके प्रसन्न, अनावृष्टि दु:ख का किया विनाश।। 47
पत्नियों से प्रेरित मुनियों ने, उनसे किया छल का व्यवहार।
गणपति की आराधना करके, गौतम से कराया गो पे प्रहार।। 48
गणेश ने ऐसा रचा विधान, गाय के निकले हैं प्राण।
मुनियों ने कह गोहत्यारा, उन दोनों का किया अपमान।। 49
गौतम को मुनियों ने प्रायश्चित के लिए बोला यह उपचार।
पार्थिव पूजन गंगा स्नान, परिक्रमा गिरि की ग्यारह बार।। 50
पत्नि संग गौतम ऋषि ने, सारा प्रायश्चित किया सम्पन्न।
भोले बाबा प्रकट हुए और गंगा भी हुई प्रसन्न।। 51
महर्षि गौतम की विनती सुन, शिव गंगा हुए वहाँ पे स्थित।
शिवलिङ्ग का त्र्यम्बकेश्वर नाम हुआ, गौतमी नाम से गंगा प्रसिद्ध॥ 52
त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग गौतमी नदी के तट पर है विद्यमान।
दर्शन पूजन स्तवन जो करते, शिव करते उनका कल्याण।। 53
लंकापति रावण काट सिरों को, शिव का करता है पूजन।
दसवाँ सिर जब रह गया शेष, भोले ने दे दिये दर्शन।। 54
शिवलिङ्ग देकर बोले भोले, इसको ले करो निज गृह प्रस्थान।
मार्ग में यदि रखा इसको, स्थित होगा वहीं निश्चय जान।। 55
शिव माया से मार्ग में उसको, लघुशंका की हुई इच्छा।
एक गोप को सौंपा शिवलिङ्ग, कहा करो मेरी प्रतीक्षा।। 56
भार से पीड़ित होके गोप ने, शिवलिङ्ग रख दिया धरती पर।
वो तो स्थित हो गया वहीं, जैसा रावण से बोले थे हर।। 57
वैद्य की भाँति सिर है जोड़े, लिङ्ग वैद्यनाथेश्वर कहलाता।
दर्शन पूजन करने वाला, मनवांछित फल को पाता।। 58

दारूका राक्षसी हुई अहंकारी, पार्वती से पा वरदान।
रक्षण करती वह उस वन का, देवी ने जो किया प्रदान।। 59
दारूक दारूका पति पत्नि, वहाँ के लोगो को देते त्रास।
पर और्व ऋषि के शाप से दैत्यों, को न रही जीने की आस।। 60
तब लेकर के वन प्रदेश को, दारूका पहुँची सागर बीच।
राक्षस नौकाओं को पकड़ते, यात्रियों को करते भयभीत।। 61
उनमें था एक वैश्य सुप्रिय, जो करता नित शिव पूजन।
मन्दिर सहित प्रकट हुए भोले,उस की पूजा से हो प्रसन्न।। 62
वध करके असुरों का शिव, शिवा सहित वहीं हो गए स्थित।
नागेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग कहलाया, नागेश्वरी पार्वती प्रसिद्ध।। 63
त्रेतायुग में विष्णु ने ही, राम रूप अवतार लिया।
स्वार्थी कैकेयी ने उन्हें, चौदह वर्ष वनवास दिया।। 64
संग गए लक्ष्मण सीता, सीता को रावण ने हरा।
हनुमत सुग्रीव का पाकर संग, राम ने युद्ध संकल्प करा।। 65
अगाघ समुद्र को देख राम ने, किया इष्ट का आराधन।
जल भी ग्रहण किया करके, पार्थिव पूजा को सम्पन्न।। 66
हुए प्रसन्न प्रकटे भोले, दिया विजय का उन्हें वरदान।
बोले राम जी यहीं रहे, करने को जग का कल्याण।। 67
विनती सुनकर श्रीराम की, लिङ्गरूप में हो गए स्थित।
रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग के नाम से, हुए धरा पे प्रसिद्ध।। 68
वेदवेत्ता सुधर्मा ब्राह्मण, की शिव भक्ति अति महान।
पत्नि सुदेहा रहती दुःखी, जब न हुई उन के संतान।। 69
आग्रह करके अपनी बहन, घुश्मा संग करती पति का लग्न।
घुश्मा बनाती नित्य सौ शिवलिङ्ग, करती सरोवर में विसर्जन।। 70

घुश्मा के एक पुत्र हुआ, पर वह रहती शिव भक्ति में लीन।
युवा हुआ तो किया विवाह, सुदेहा का मन हुआ मलिन।। 71
सुदेहा को सौतिया डाह हुआ, घुश्मा के पुत्र को मार दिया।
पत्नि ने जब पति मृत देखा, जोर-जोर से विलाप किया।। 72
पर घुश्मा सुघर्मा नित्य की भांति, शिवलिङ्ग का करते निर्माण।
जिसने दिया वही करेगा रक्षण, उनके मन में विश्वास महान।। 73
सरोवर में शिवलिङ्ग किये विसर्जन, पुत्र को जीवित है पाया।
प्रकटे शङ्कर बोले घुश्मा, वर मांगो तुम मन भाया। 74
बोली घुश्मा मेरे नाम से, जगहित करो यहीं पे निवास।
घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग कहलाया, दर्शन से पूर्ण हो सब आस।। 75
सूत जी अब हरीश्वर लिङ्ग की, मुनियों को कथा सुनाते हैं।
विष्णु ने चक्र सुदर्शन को, कैसे पाया बताते हैं।। 76
हमको देते दैत्य पीड़ा, विष्णु को देव बतलाते हैं।
व्यथा दूर करने को उनकी, विष्णु शिव शरण में जाते हैं।। 77
पार्थिव लिङ्ग बनाकर शिव का, प्रतिदिन करते शिव पूजन।
शिव के सहस्र नाम को पढ़ते, प्रतिनाम से करें कमल अर्पण।। 78
विष्णु भक्ति परीक्षा को, शिव ने किया एक कमल का हरण।
कमल न पाया कमल के जैसा, अपना नयन करते अर्पण।। 79
हुए प्रसन्न प्रकटे शङ्कर, बोले माँगो वांछित वर।
सुरो को असुर करते पीड़ित, असमर्थ हूँ रक्षण में हे हर।। 80
विष्णु के सुन के यह वचन, चक्र सुदर्शन किया प्रदान।
विष्णु पठित शिवसहस्र नाम पढ़, पाता है नर सिद्धि महान।। 81
ब्रह्मा विष्णु सभी देवगण, ऋषि मुनि और राजा गण।
मनवांछित फल पाते.हैं सब, करके शिव का आराधन।। 82

प्रतिदिन जो शिव पूजन करता, शिव को बहुत ही भाता है।
व्रतों में शिवरात्रि सर्वोत्तम, भक्ति मुक्ति का दाता है।। 83
अनजाने में दुष्ट व्याध से, शिवरात्रि व्रत हुआ सम्पन्न।
उससे निर्मल मन वाला हो, शिव के लोक में किया गमन।। 84
शिवमय है संसार यह सारा, कुछ भी नहीं शिव के अतिरिक्त।
अंहकार वश भिन्न समझता, स्वयं को प्राणी होके भ्रमित।। 85
चौथी कोटि रुद्र संहिता, का करता जो सदा श्रवण।
परमगति को है वो पाता, कटते उस के भव बंधन।। 86

॥ चतुर्थ कोटि रुद्र संहिता पूर्ण ॥

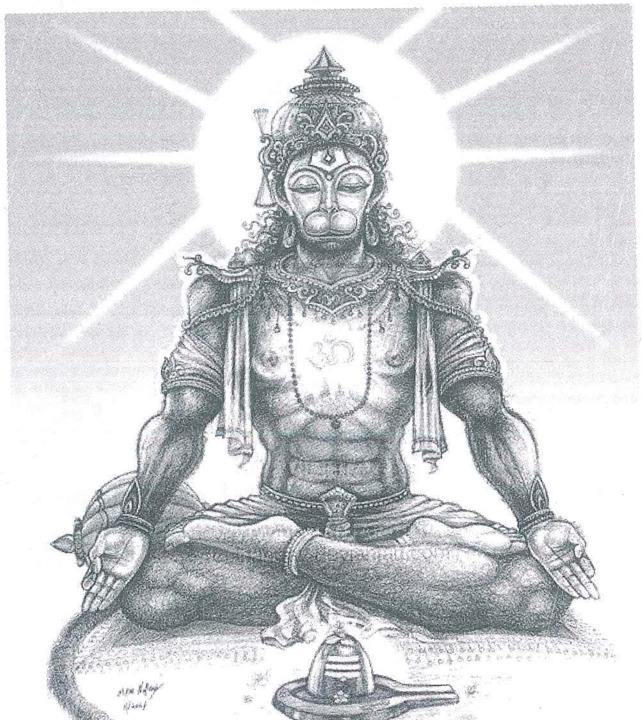

शिव-भक्ति-रस-धारा

पञ्चम उमा संहिता

सतोगुण का ले आश्रय जो, चौदह भुवन करते धारण।
राजसी गुण का लेकर आश्रय, सृष्टि का जो करते सृजन।। 1
समन्वित होकर तामसी गुण से, सृष्टि का जो करें संहार।
ऐसे गुणातीत शिव को, नमन है मेरा बारम्बार।। 2
ऋषि मुनि श्री सूत से बोले, उमा संहिता सुनना चाहते हैं।
सुनाया सनत् ने श्री व्यास को, वो ही तम्हें सुनाते है।। 3
उपमन्यु ने पुत्र पाने को, शिव महिमा कृष्ण को बतलाई।
प्रसन्न हो ऋषि को किया नमन, शिव दर्शन की मन में आई।। 4
ध्यान लगा कर भोले का, कठिन तपस्या में हुए मग्न।
सोलहवें मास में दिये दर्शन, गौरी संग शिव ने होके प्रसन्न।। 5
शास्त्र विधि से पूजा की, सहस्र नाम का किया है गान।
देवो ने बरसाये पुष्प, बोले भक्त वत्सल भगवान।। 6
मुनि शापित संवर्तक सूर्य, तव पुत्र रूप में आयेगा।
साम्ब नाम से वह इस जग में, प्रसिद्धि को पायेगा।। 7
और भी कई वांछित वर पाये, शिवा भी बोली हो कल्याण।
कृष्ण पे अपनी कर के कृपा, दोनो हो गए अन्तर्धान।। 8
मानसिक, वाचिक कायिक पापों का करते हैं अब वर्णन।
महापातकों का भी व्यास को, सनत् कुमार कराते श्रवण।। 9
इन पापों के कर्ता प्राणी, घोर नरक में जाते हैं।
छोटे बड़े पापों के क्रम से, नरक कोटि को पाते हैं।। 10

एक सौ चालीस नरक बताये, कहलाता यह नरक मण्डल।
जैसे कर्म करते हैं प्राणी, वैसा ही पाते हैं फल।। 11
मृत्युलोक के प्राणी अवश्य, यम की पुरी में जाते हैं।
मृत्युलोक से दूरी छियासी, हजार योजन बतलाते हैं।। 12
पुण्यकर्म करने वालों को, यमपुरी लगती बड़ी समीप।
महापापी का मार्ग कठिन है, होती उसको दूर प्रतीत।।13
यम का मार्ग सरल हो जाए, दान की महिमा बताते हैं।
अन्न में प्राण प्रतिष्ठित है, अन्नदाता सदा सुख पाते है।।14
जलदान जलाशय का निर्माण, वृक्षारोपण सत्य भाषण।
वेद पुराणों का पठन श्रवण, यम मार्ग के ये सुख के साधन।। 15
तुला गाय पृथ्वी व विद्या, इनका दान बड़ा ही प्रशस्त।
इन चारों का दानी यमपुरी, मार्ग पीड़ा से न होता त्रस्त।। 16
फिर ब्रह्माण्ड का दान बताया, जिससे मिलता सब दानों का फल।
कर्ता इसका विष्णु पद पाके, जीवन अपना करता सफल।। 17
इस प्रसङ्ग में सनत् कुमार जी, ब्रह्माण्ड का स्वरूप बताते है।
सारे भूमण्डल के विषय को, सविस्तार सुनाते है।। 18
बड़े से बड़े पाप का प्रायश्चित, शिव नाम स्मरण बताते हैं।
वक्ता श्रोता शिव की कथा के, भव पार सहज हो जाते है।। 19
तप से ब्रह्मा सृष्टि रचते, तप की भी है महिमा अपार।
तप से ही विष्णु पालन करते, और रुद्र करते संहार।। 20
शिव की तपस्या करके प्राणी, शिव के लोक को पाता है।
शिव-शिव 'हर हर' कहने वाला, कभी नरक न जाता है।। 21
मरणासन्न के बताये लक्षण, जिससे होता मृत्यु का ज्ञान।
लेता जीत काल को योगी, जो करता है निरन्तर ध्यान।। 22

भ्रूमध्य में अग्नि का ध्यान, प्राणायाम मुख से वायुपान।
जिह्वा से गले की घांटी छूना, साधन ये अमरत्व के जान।। 23
ब्रह्मा व स्वायम्भुव मनु की, आदि सृष्टि का किया वर्णन।
दक्ष से शाप मिला नारद को, मुनियों को कराया इसका श्रवण।। 24
महर्षि कश्यप के भी वंश का, वर्णन करते सविस्तार।
चौदह मन्वन्तर मनु वंश वर्णन सुनाया हर्षित होके अपार।। 25
पितृ श्राद्ध की महिमा भारी, पितरों को करते जो प्रसन्न।
पिता पितामह प्रपितामह का, श्राद्ध करते पिण्डों से सम्पन्न।। 26
उनको पितर धर्म संतान और पुष्टि करते प्रदान।
इस प्रंसग में सनत् जी ने, सुनाया सप्त व्याध आख्यान।। 27
शिव का नाम स्मरण करके ही, प्राणी मुक्ति पाते हैं।
शिव के नाम के कीर्तन से, सब पाप नष्ट हो जाते हैं।। 28
सूत जी मुनियों को अब व्यास उत्पत्ति कथा बताते हैं।
मध्यमेश्वर लिङ्ग के अनुग्रह से वह पुराण सजृन शक्ति पाते है।।29
काशी में मध्यमेश्वर लिङ्ग से, बढ़कर लिङ्ग न कोई महान।
प्रत्येक पर्व पर दर्शन करते, देवतागण भी स्वर्ग से आन।। 30
सूत जी से मुनिगण हैं बोले, सुनाई आपने शिव की कथा।
चरित्र भगवती जगदम्बा का भी, सुनाइये हमपे करके कृपा।। 31
महेश्वर की वह आद्या शक्ति, उमा के नाम से है विख्यात।
सती पार्वती अवतार सुने है, शेष अवतार नहीं हैं ज्ञात।। 32
अम्बा चरित्र सुनना हो चाहते, अति प्रसन्न हैं तुम से हम।
इसके वक्ता श्रोता की, पद रज कहलाती तीर्थ सम ।। 33
पूर्वकाल में राजा सुरथ ने, मेघा ऋषि से पूछा यह प्रश्न।
ऋषि ने राजा को जो सुनाया़, वही कराता हूँ तुम्हें श्रवण।। 34

स्वारोचिषमन्वन्तर में, विरथ पुत्र हुए राजा सुरथ।
नौ शत्रुओं से आक्रामित, हो गए उनसे युद्ध में रत।। 35
पराजित हो निज पुरी में आए, मंत्री भी बन गए दुश्मन।
उनसे सब धन छीन लिया, आखेट हेतु वे निकले वन।। 36
मेधा ऋषि के आश्रम पहुँचे, वह वेद मंत्रों से गुञ्जायमान।
हारे थके उस राजा का, ऋषि ने किया आदर सम्मान।। 37
समाधि नाम का वैश्य आया, जब बीता थोड़ा सा काल।
धन के लोभ में स्त्री पुत्रों ने, दिया उस को घर से निकाल।। 38
मोह ममता में डूबे दोनों, मेधा ऋषि के आये पास।
बोले धोखा दिया जिन्होंने, क्यों आती हमें उन की याद।। 39
ऋषि बोले महामाया ही, करती सृजन पालन संहार।
जिस पर करती हैं वे कृपा, मोह ममता से होता उद्धार।। 40
राजा और वैश्य बोले ऋषिवर, रूप उनका बतलाइयेगा।
कैसे हुई उन की उत्पत्ति, यह सब हमें सुनाइयेगा।। 41
विष्णु शेषशय्या पे सोये, जब था एकार्णव में जगत।
उनके कानों के मल से, दैत्य मधु कैटभ हुए प्रकट ।। 42
नाभिकमल में विराजित ब्रह्मा को मारने को हुए तैयार।
ब्रह्मा प्रार्थित महामाया ने, महाकाली रूप लिया है धार।। 43
विष्णु जगे मधु कैटभ से, युद्ध हुआ वर्ष पाँच हजार।
महामाया से मोहित दैत्य बोले करो वर हम से स्वीकार।। 44
विष्णु कहें मेरे हाथों मरो, वे कहते जहाँ न धरा पे जल।
जाँघ पे अपनी रखकर के, दोनो के काटे सिर उसी पल ।। 45
हे राजन! कालिका की उत्पत्ति का मैंने करा बखान।
अब महालक्ष्मी की उत्पत्ति का सुनिए वृत्तान्त लगाकर ध्यान।। 46

रम्भ पुत्र महिषासुर ने, देवो को जीत मचाया उत्पात।
देव गये ब्रह्मा की शरण सब मिल गए शिव विष्णु के पास।। 47
देवो ने बताई अपनी व्यथा, दिया स्वर्ग से हमें निकाल।
कुपित हुए शिव विष्णु मुख से, निकला अद्भुत तेज विशाल।। 48
सब देवो के शरीर से भी, भंयकर तेज हुआ है प्रकट।
पुंजीभूत हुआ वह तेज, नारी रूप में हुआ परिणत।। 49
कमलनिवासिनी महिषमर्दिनी, महालक्ष्मी का वह अवतार।
अस्त्र शस्त्र दिये देवों ने, आभूषण व सामग्रीशृंगार।। 50
अट्टहास किया देवी ने, त्रिलोकी भी उठी है काँप।
अस्त्रों सहित महिषासुर दौड़ा, देवी की भयंकर गर्जना भाँप।। 51
करोड़ों महावीरो को लाया, असंख्य शस्त्र किये धारण।
युद्ध हुआ देवी से भयंकर, लगे परस्पर सब मारन।। 52
असुर ने कई रूपों को धारा, पर मरने से न बच पाया।
कुपित देवी ने महाखडग से, सिर काट धरा पे है गिराया।। 53
भाग गई महिषासुर की, सारी सेना हो भयभीत।
देवों ने की स्तुति देवी की, गंधर्वो ने गाए गीत।। 54
ऋषि बोले अब सरस्वती की, उत्पत्ति का करो श्रवण।
शुम्भ निशुम्भ दोनों दैत्यों ने, किया त्रिलोकी का उत्पीड़न।। 55
उत्पीड़ित हो देवों ने, देवी शिवा को किया नमस्कार।
तुम्ही पराम्बा भुवनेश्वरी, जया मङ्गला नमन तुम्हें बारम्बार।। 56
देवों की स्तुति सुन करके, हुई पार्वती जी प्रसन्न महान।
प्रकटी उनकी देह से कन्या, अनुपम सौन्दर्य की खान।। 57
पार्वती के शरीर कोश से उत्पन्न, इस का कौशिकी नाम।
यही उग्रतारिका महोग्रतारिका मातंगी तुम को प्रणाम।। 58

शुम्भ निशुम्भ के सेवक, चण्ड मुण्ड ने किया उन का दर्शन।
अपने स्वामी से जाके किया है, उनकी सुन्दरता का वर्णन।। 59
स्त्री रत्न है वह देवी, और आप है पुरूष रत्न।
शोभा आपको ही देगा, उसका करो तुम पाणिग्रहण।। 60
सुग्रीव नाम के दूत को भेजा, देकर के अपना संदेश।
देवी बोली जो युद्ध में जीते, वही होगा मेरा प्राणेश।। 61
दूत से देवी वचन सुनकर, धूम्राक्ष को भेजा होके कुपित।
हुंकार से उसको भस्म किया, धूमावती नाम से हुई प्रसिद्ध।। 62
तब चण्ड मुण्ड रक्तबीज ने आके, देवी को ललकारा है।
(पर) परमेश्वरी ने लीला मात्र से, उन दैत्यों को मारा है।। 63
चण्ड मुण्ड के वध को सुनकर, शुभ निशुम्भ हुए रथ पे सवार।
असंख्य सेना साथ में ले ली, रणभूमि में आ की ललकार।। 64
कालिका ने मछली सम काटे, सब दैत्यों के रण में शरीर।
रक्त की नदियाँ बहने लगी, निशुम्भ हुआ मन में गंभीर।। 65
स्त्री साधारण नहीं यह कोई, पराम्बा शिवा होती प्रतीत।
इनके रण कौशल के सामने, सारी सेना है भयभीत।। 66
स्त्री द्वारा वध निन्दित है, करने लगा बाणों से प्रहार।
अम्बा ने विषैले बाणों से, भूमि पे गिरा के दिया उसे मार।। 67
अनुज मरा तो कुपित शुम्भ, रण में आया हो रथ पे सवार।
अट्टाहस किया अम्बिका ने, देवो ने की जय जयकार।। 68
लेकर के त्रिशूल हाथ में, कालिका ने दिया शुम्भ को मार।
शिवा के कर कमलों से मरे, हो गया दोनो का उद्धार।। 69
ऋषि बोले राजन तुमको, सरस्वती उत्पत्ति बताई है।
जो शुम्भ निशुम्भ वध हेतु शिवा ने, निज देह से प्रकटायी है।। 70

सूत जी मुनिगण से हैं बोले, उमा चरित अब करो श्रवण।
दैत्य जीत से देव गर्व का, माँ ने कैसे किया दमन।। 71
प्रकटे पुंजीभूत तेज को, देख हुए सब देव हैरान।
इन्द्र ने सब देवों से कहा, परीक्षा कर लो इस को जान।। 72
उस तेज पुंज के सामने, वायु अग्नि आदि गए सब हार।
इन्द्र के सामने लुप्त हुआ वह, इन्द्र ने मन में किया विचार।। 73
जिस का ऐसा चरित्र है उस सर्वेश्वर की लेता हूँ शरण।
अनुग्रह कर प्रकटी माँ अम्बा, करने को उनका गर्व हरण।। 74
उस तेजपुंज के मध्य विराजित, माँ बोली मैं ही हूँ ब्रह्म।
मैं ही ब्रह्मा विष्णु शिव हूँ, मेरी माया से होता भ्रम।। 75
निराकार साकार भी मैं हूँ, देवो! तुम छोड़ो अभिमान।
क्षमा याचना कर के देवता, माँ की स्तुति का करते गान।। 76
सौ वर्षों की अनावृष्टि से हुआ त्रिलोकी में हाहाकार।
शरण गए देव योगमाया की, करते नमन उन्हें बारम्बार।। 77
दयामयी माँ ने अनन्त नेत्रों से, अश्रु बहाये नौ दिन रात।
भोज्य सामग्री हुई भरपूर, शताक्षी शाकम्भरी जग विख्यात।। 78
दुर्गम से जब युद्ध हुआ, प्रकटायी महाविद्याएँ दस।
असंख्य मातृकाएँ प्रकटायीं, जो करतीं दुर्गम सेना विनष्ट।। 79
दुर्गम दैत्य को है मारा, दुर्गा नाम धराया है।
देवों के हित माँ ने सदा, दैत्यों को मार गिराया है।। 80
माता का मन्दिर जो बनाता, हजार कुलों को तारता है।
भव बन्धन से मुक्त है होता, देवी लोक में जाता है।। 81
उमा नाम के दो अक्षर का, जो उच्चारण करता है।
है साक्षात देवी का गण, भगवती को प्यारा लगता है।। 82

परम पुण्यमयी उमा संहिता, शिव भक्ति को बढ़ाती है।
श्रोता वक्ता का करे कल्याण, भक्ति मुक्ति की दाती है।। 83

॥ पञ्चम उमा संहिता पूर्ण ॥

शिव-भक्ति-रस-धारा

षष्टम् कैलास संहिता

प्रकृति पुरुष के हैं जो नियन्ता, करते सृजन पालन संहार।
पार्षदो पुत्रो गौरी संग, उन शिव को करते नमस्कार।। 1
सूत जी से ऋषि बोले आपने, उमा संहिता कराई श्रवण।
सुनाइये अब कैलास संहिता, जो करे शिवतत्व ज्ञानवर्धन।।2
व्यास शिष्य महाभाग सूत जी, सुन कर के ऋषियों के वचन।
महादेव कार्तिकेय नन्दीश्वर सनत् व्यास को करते नमन।। 3
सूत जी बोले प्रणव का प्रकाशक, शिव का ज्ञान अति दुर्लभ।
शिव जी जिन पर होते प्रसन्न, उन भक्तो को हैं यह सुलभ।। 4
हिमालय सुता गौरी ने थी, विनती करी शिव से एक बार।
हमे बताइये आप प्रभु, स्वरूप प्रणव का सविस्तार।। 5
सूत जी बोले शिव ने बताया, शिवा को होकर के प्रसन्न।
वही सुनाता हूँ मै तुमको, सावधान हो करो श्रवण।। 6
शिव बोले प्रणव के अर्थ को, जानना ही है मेरा ज्ञान।
सूक्ष्म है वह बीज के सम, और विशाल वट वृक्ष समान।। 7
प्रणव वेद का आदि है, मेरा ही स्वरूप रहा इसमें भास।
यह वेदों का सार इसी एकाक्षर मंत्र में मेरा निवास।। 8
शिव ही प्रणव है प्रणव ही शिव है, वाच्य वाचक में नहीं है भेद।
मोक्ष की इच्छा वालों को शिव प्रणव का ही करते उपदेश।। 9
अकार उकार मकार ये तीनों बाद में अर्ध मात्रा आती।
नाद बिन्दु स्वरूप वाली यह अर्ध मात्रा कहलाती ।। 10

अकार स्वरूप है ब्रह्मा का, योनिरूपा प्रकृति उकार।
नाद बिन्दु सब शिव के रूप हैं, संहारक शिव का रूप मकार।। 11
अकार आदि पांचो वर्णो में, सद्योजात से ईशान पर्यन्त।
क्रमशः पाँचो ब्रह्म है स्थित, पंचब्रह्ममय सारा जगत।। 12
ब्रह्मा से स्थावर पर्यन्त, प्रणव ही सब प्राणियों का प्राण।
इसीलिए कहलाता प्रणव सब, विद्याओं का बीज इसी को जान।। 13
प्रणव मीमांसा कर के शिव ने संन्यास विधि का किया वर्णन।
कैसे करें शिव ध्यान और पूजा, सब विधियों का कराया श्रवण।। 14
अति गुह्य यह ज्ञान है इसके, केवल यति ही अधिकारी।
प्रणवार्थ प्रकाशिका विधि जान के, शिवा हुई हर्षित भारी।। 15
सूत जी ऋषियों को अब वामदेव के विषय में बताते हैं।
उत्पन्न होते ही जो श्रेष्ठतम शिवज्ञान वेत्ता कहलाते है। 16
कुमार शिखर पर पहुँचे एकदा, जहाँ विराजित स्कन्द भगवान।
पास में स्थित शीतल जल वाले, स्कन्द सरोवर में किया स्नान।। 17
चार हाथो में शक्ति कुक्कुट, वर अभयमुद्रा किये धारण।
दर्शन करके वामदेव जी, करते उनकी स्तुति गायन।। 18
मुनि की स्तुति सुन कार्तिकेय भगवन, मन में हो गए अति प्रसन्न।
बोले जो सुनना चाहते हो, बताओ करूँगा मैं वो कथन।। 19
मुनि बोले मैं प्रणव रूप शिवतत्व का करना चाहता श्रवण।
मुझ पर होगी अति कृपा , करिये इस का आप कथन।। 20
प्रणव के अर्थ है साक्षात् शिव, कार्तिकेय भगवन बतलाते है।
उनके प्रकाश से जगत प्रकाशित, वे कहीं से प्रकाश न पाते है।। 21
फिर वे प्रणव के छः प्रकार के अर्थो का करते विस्तार।
तिरोभाव आदि चक्र बताये, ब्रह्माण्ड शिव ही कहते यह सार।। 22

सन्यास की पद्धति का कर वर्णन, महावाक्यों के अर्थ बताते हैं।
यतियों की क्षौर स्नानादि विधि व अन्य आचार सुनाते हैं।। 23
यति के अन्त्येष्टि कर्म की दशाह पर्यन्त विधि को बताया है।
एकादशाह व द्वादशाह कृत्य का भी श्रवण कराया है।। 24
स्कन्द वामदेव कैलास गए, शिव पार्वती के किये दर्शन।
करके संहिता का उपसंहार, सूत जी करते तीर्थ गमन।।25

॥ षष्टम् कैलास संहिता पूर्ण ॥

नटराज

शिव-भक्ति-रस-धारा

सप्तम् वायवीय संहिता

पूर्व खण्ड

सर्वत्र ऐश्वर्य समाया जिनका, जिन की शक्ति की नहीं तुलन ।
स्वामित्व विभुत्व स्वभाव है जिनका, उन शिव की लेती हूँ मैं शरण।। 1
नैमिषारण्य में मुनियो ने, किया महायज्ञ का आयोजन।
सूत जी आये पूजन कर, मुनि कहते अपना प्रयोजन।। 2
पुराण विद्या में दक्ष हो आप, पुराण कथाओं की हो खान।
वेदान्त का सार पुराण सुनाइये, जिससे हो सब का कल्याण।। 3
शिव पुराण की वायवीय संहिता का मै कराऊँ तुम को श्रवण।
जिनसे पुराणसंहिता है पाई, उन व्यास भगवान को मेरा नमन।। 4
परब्रह्म का निरूपण करने में अक्षम मुनि हुए निराश।
समाधान पाने को इसका, मुनिगण गए ब्रह्मा के पास।। 5
ध्यान मग्न हो ब्रह्मा जी, रूद्र यह शब्द उच्चारते है।
मन वाणी से अगम्य रूद्र ही, सर्वेश्वर कहलाते है।। 6
रूद्र ही सब के आदि है, पर नहीं उनका आदि अंत।
उनके जैसा कोई नही हैं, सब के आराध्य वे ही अनंत।। 7
यदि मुक्त होना चाहते हो, करो केवल शिव आराधन।
उनकी भक्ति से ही बनोगे, उन के अनुग्रह के भाजन।। 8
भक्ति से शिव कृपा है मिलती, शिव कृपा से मिलती शिव भक्ति।
कर्म के फल का त्याग करें जब, शिव धर्म में होती है प्रवृति।। 9

एक सहस्त्र वर्ष वाले, यज्ञ का करो तुम अब अनुष्ठान।
इस के अंत में आयेंगे, वायुदेव करने कल्याण।। 10
फिर तुम जाना वाराणसी , जहाँ गौरी संग शिव करते विहार।
मेरे पास आ जाना तुम सब, देख के वहाँ आश्चर्य अपार।। 11
जन्म जन्म के भव बंधन से, जिससे हो जाये छुटकारा।
मुक्ति उपाय बताऊँगा फिर, इसी जन्म में हो निस्तारा।। 12
मनोमय चक्र मैं छोड़ रहा हूँ, नेमि टूट के जहाँ गिरे।
स्थल वो मङ्गलमय होगा, वहीं पे जा के तपस्या करें।। 13
चक्र गिरा वन में जा शिला पर, नैमिषारण्य हुआ विख्यात।
तप से पावन इस धरती का, दर्शन मन को अति सुहात।। 14
दिव्य यज्ञ जब पूर्ण हुआ तो हुआ वायुदेवता का आगमन।
मुनियों ने प्रणाम किया और दिया सुवर्णमय उन्हें आसन।। 15
पूछने पर सब ऋषियों के, वायुदेव बतलाते है।
पाश पशु और पशुपति का, ज्ञान उन्हें समझाते है।। 16
माया पाश मे बंधे जीव सब, पशु श्रेणी में आते हैं।
पाश से मुक्ति देने वाले, शिव पशुपति कहलाते हैं।। 17
शिव ही सृष्टि रचते करते पालन और इस का संहार।
शिव की भक्ति करने वाला, सहज ही होता भव से पार।। 18
वायुदेव ने भिन्न-भिन्न दृष्टान्तों से समझाया है।
शिवतत्व के ज्ञान को पाकर, ऋषियों का मन हरषाया है। 19
काल से सब उत्पन्न होता, काल से सब कुछ होता नष्ट।
वही काल है शिव के वश में, शिव नहीं हैं उस काल के वश।। 20
ब्रह्मा कैसे सृष्टि रचते, वायुदेव बतलाते हैं।
ब्रह्मा के मुख से रूद्र के प्रकट होने का मर्म समझाते हैं।। 21

दुःखी हो जाते ब्रह्मा जब, सृष्टि का होता नहीं विस्तार।
प्रकट हो ब्रह्मा मुख से शिव जी, उनपे करते अनुग्रह अपार।। 22
शिव के अर्धनारीश्वर रूप का ब्रह्मा करते हैं स्तुति गान।
दक्ष पुत्री बन आऊँगी कह, हुए शिवा शिव अन्तर्धान।। 23
दक्ष के शिव से द्वेष के कारण, शिवा तज देती अपने प्राण।
हिमालय सुता बन तप हैं करती, शिव को पाना ही लक्ष्य मान।। 24
हुए ब्रह्मा जी से वर पाकर, शुम्भ निशुम्भ दैत्य बलवान।
पार्वती की आयोनिज कन्या से ही मरेंगे मिला वरदान।। 25
ब्रह्मा प्रार्थित शिव ने एकान्त मे, शिवा को काली कह पुकारा।
तप करके गौर वर्णा बनूंगी, शिवा ने मन में प्रण धारा।। 26
तप करते एक व्याध्र है आया, मन में दुष्टता का ले भाव।
पर वह उन का उपासक हो गया, पाकर उनका दिव्य प्रभाव।। 27
ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर, शिवा ने काली त्वचा दी उतार।
जो कृष्ण वर्णा कौशिकी कहलाई, स्वयं ने लिया गोरा रंग धार।। 28
कौशिकी के हाथो से ही, होता शुम्भ निशुम्भ का वध।
गौरी शिव के पास है आयीं, व्याघ्र ने पाया गणाध्यक्ष पद।। 29
अब जग के अग्निषोमात्मक, वागार्थात्मक रूप का किया वर्णन।
शिव की सर्वेश्वरता का भी, वायुदेव कराते श्रवण।। 30
शिव तो सदा अनुग्रह करते हैं, निग्रह नही करते हैं कभी।
उन के निग्रह में पाते, अपना ही हित प्राणी सभी।। 31
शिव स्वभाव है अनुग्रहकारी, इसीलिए अनुग्रह करते हैं।
पशु और पाश रूप जग सारा, अनुग्रह की अपेक्षा रखते है।। 32
पति ही अनुग्रह करता है, शिव पशुपति कहलाते है।
शिव की मूर्ति लिङ्ग उपलक्षण, इन की पूजा शिव पाते है।। 33

आठ नाम शिव के प्रतिपादक, शिव महेश्वर, रूद्र ब्रह्मा।
विष्णु तथा संसार वैद्य, सर्वज्ञ और परमात्मा।। 34
इन आठ नामों का जो साधक, मन ही मन करता है ध्यान।
पाशुपत ज्ञान प्राप्ति हो जाती, होता साधक का कल्याण।। 35
अब पाशुपात व्रत की विधि और भस्म की महिमा सुनाते है।
भस्म अग्नि का वीर्य है, वायुदेव जी उन्हें बताते है।। 36
शिव भक्तो का परम अस्त्र यह, जो करता इस को धारण।
उस की बड़ी से बड़ी आपत्ति, का भी होता है निवारण।। 37
इस प्रसङ्ग में वायुदेव जी, उपमन्यु की कथा सुनाते है।
शिव का अनुग्रह कैसे पाया, सब वृतान्त बताते है।। 38
व्याघ्रपाद सुत उपमन्यु, मामा के आश्रम करते निवास।
मामा सुत को दूध मिला, वह भी माँ से करते आस।। 39
माँ से जितना दूध मिला, उपमन्यु न होते उससे तृप्त।
मातुल सुत जितना ही चाहिए, माँ से करने लगे वो हठ।।40
उञ्छ वृत्ति के बीजों से, माँ कृत्रिम दूध बनाती है।
पीकर कहते दूध नही यह, माँ उनको समझाती है।। 41
शिव की भक्ति करने वालों, ने मनचाहा पाया है।
हमने किया न शिव का पूजन, अभाव इसी कारण आया है।। 42
शिव आराधना करके मैं भी, क्षीर समुद्र को पाऊँगा।
माता नही अब चिंता करो तुम, दरिद्रय दूर भगाऊँगा।। 43
पुत्र के इन वचनो को सुनकर, माता हो गई अति प्रसन्न।
पञ्चाक्षर मंत्र शिव को प्यारा, इस का ही तुम करना जपन।। 44
विरजा होम की अग्नि से सिद्ध, भस्म को करना तुम धारण।
तुम्हारे पिता से मैने पाई, करेगी आपत्तियों का निवारण।। 45

सब देवता मङ्गल करें तुम्हारा, माता देती आशीर्वाद।
करने लगे वे कठिन तपस्या, माता से कर आज्ञा प्राप्त।। 46
आठ ईटों का बना के देवालय, किया शिवलिङ्ग का स्थापन।
पञ्चाक्षर मंत्र को जपने लगे, कर शिव पार्वती का आवाहन।। 47
उपमन्यु की तपस्या से, संतप्त हो गया सब संसार।
देवो से प्रार्थित शिव ने इसे, दर्शन देने का किया विचार।। 48
इन्द्ररूप धारी शिव बोले, उपमन्यु तुम मांगो वर।
शिव की भक्ति मुझको चाहिए, बोला जोड़ के दोनो कर।। 49
शिव ने पिशाच भाव को पाया, करो मेरा ही आराधन।
मैं तुमको सब कुछ वो दूँगा, जो भी करोगे तुम याचन।। 50
शिव निंदा वो सह न पाये, उपमन्यु हुए मरने को तैयार।
रोक उसे शिव ने दिये दर्शन, बालेन्दु शेखर रूप को धार।। 51
भक्ति भाव से उपमन्यु, शिव को करते दण्डवत् प्रणाम।
पुत्र कह शिव ने गले लगाया, मनोरथ पूरे किये तमाम।। 52
शिव और शिवा से दिव्य वरों को, और नित्य कुमारत्व को पाया।
शिव की सच्ची भक्ति पाकर, उपमन्यु का मन हरषाया।। 53
अजर अमर होने का दे वर, शिव और शिवा हुए अन्तर्धान।
अति प्रसन्न हृदय से उन्होंने, माँ के पास किया प्रस्थान।। 54

॥ सप्तम् वायवीय संहिता - पूर्व खण्ड पूर्ण ॥

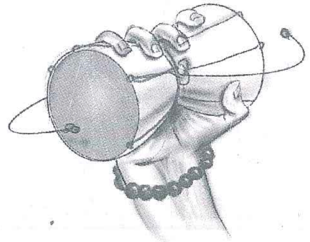

शिव-भक्ति-रस-धारा

सप्तम् वायवीय संहिता

उत्तरखण्ड

पूर्व खण्ड सम्पूर्ण हुआ उत्तरखण्ड सुनाते हैं।
पाशुपत ज्ञान श्रीकृष्ण ने पाया, वायुदेव बतलाते हैं।। 1
उपमन्यु के आश्रम जा कर, करते श्रीकृष्ण उनको नमन।
तीन बार परिक्रमा करके हाथ जोड़ करते हैं स्तवन।। 2
पहले मुनि पाशुपत व्रत, करवाते बारह मास का।
फिर प्रदान करते उनको, पाशुपत के ज्ञान का।। 3
पुत्र हेतु श्री कृष्ण हैं करते, साम्ब शिव का आराधन।
एक वर्ष के तप से प्रसन्न हो, शिव देते उनको दर्शन।। 4
चूंकि साम्ब शिव से श्रीकृष्ण पुत्र की प्राप्ति करते हैं।
इसीलिए जाम्बवती के पुत्र का नाम साम्ब वे रखते हैं।। 5
ब्रह्मा विष्णु रूद्र सदाशिव, पांचवी मूर्ति है महेशान।
इन से ही हे श्री कृष्ण, विस्तार को पाता सारा जहान।। 6
शिव की पुरूष अघोर वामदेव, सद्योजात और ईशान।
ये पाँचो ब्रह्ममूर्तियाँ ही, करती जग का कल्याण।। 7
उग्र रुद्र भव शर्व भीम, पशुपति महादेव और ईशान।
इन अष्टमूर्तियों में व्यापक, सारा विश्व शिव रूप ही जान।। 8
सर्व रूप हैं शिवा और शिव, करते हैं जग का कल्याण।
इन दोनो के वश में जग है, इन दोनो में न भिन्नता मान।। 9

इन दोनो के यथार्थ स्वरूप का, कैसे कर सकते वर्णन।
वे ही जान पाते करते जो, उनके चरणो में चित्त अर्पण।। 10
ज्ञान क्रिया और इच्छा, तीनो शक्ति द्वारा शिव शक्तिमान।
करके व्याप्त सारे जग को, करते है इस का उत्थान।। 11
जैसे मात-पिता बिन पुत्र, की नही होती है प्राप्ति।
वैसे भव भवानी बिन, जग की न होती उत्पत्ति।। 12
जग में सारे पुरूष शिव ही हैं, शिवा ही स्त्रियाँ हैं सारी।
शिव और शिवा की विभूति हैं ये, सारे जग के नर नारी।। 13
शिव का न कोई कारण कर्ता, न आदि मध्य और अंत।
न कोई बंधु वैरी उनका, न ही त्राता और नियन्त।। 14
स्वभाव से च्युत न होने से, स्थाणु वे कहलाते हैं।
प्रणव है परब्रह्म शिव का वाचक, मुनि उपमन्यु बताते हैं।। 15
शक्तिमान शिव वेद्य हैं, शक्ति रूपिणी शिवा विद्या।
सत्ताईस रूपिणी शक्ति व शिव, चरणो में मुक्ति है विराजिता।।16
अपने हृदय में शक्ति सहित, शिव का करते हैं जो दर्शन।
शान्ति व मुक्ति उन्हें ही मिलती, ऐसा श्रुतियों का है कथन।। 17
वेदो का जो सारतत्व है, शैव ज्ञान कहलाता है।
गुरू कृपा से मिलता है यह, और मुक्ति का प्रदाता है।। 18
पूजा विधि पूछी देवो ने, सूर्यमय स्वरूप दिखाया है।
शिव रूपी सूर्य के पूजक ने मनवांछित पाया है।। 19
योगाचार्यो के ब्याज से, होते शिव के हजारों अवतार।
शिव के भजन में श्रद्धा जरूरी, तभी भक्त होता भव पार।। 20
बाह्य और आभ्यन्तर, शिव के भजन के दो हैं प्रकार।
दोनो में ही भाव सहित, भजन मेरे शिव को है स्वीकार।। 21

कौन भक्त है प्यारा शिव को, पार्वती को बताया है।
जिस का चित्त समर्पित मुझको, उसने ही मुझको पाया है।। 22
अब मुनि उपमन्यु पञ्चाक्षर, मंत्र की महिमा बताते है।
थोड़े से अक्षर वाला पर, मुक्ति इससे पाते है।। 23
शिव की आज्ञा से सिद्ध है यह, मनवांछित पाते सब भक्तजन।
प्रभु शिव इस में प्रतिष्ठित हैं, महान अर्थों से यह सम्पन्न।। 24
सब विद्याओं का बीज षडक्षर मंत्र शिव का है वाचक।
जिस की जिह्वा पे ये विराजित, उस का यह कल्याण कारक।। 25
शिव जी कहते पार्वती से, मेरा तो ऐसा है प्रण।
पञ्चाक्षर मंत्र के आश्रित के, कट जायेंगे निश्चित भव बंधन।। 26
मानस जप उत्तम उपांशु मध्यम, वाचिक अधम कहलाता है।
सगर्भ जप करने वाला, सौगुणा अधिक फल पाता है।। 27
उपमन्यु कहते हे यदुनन्दन, शिव ने दिया शिवा को यह ज्ञान।
भक्ति भाव से जो सुनता सुनाता, परमगति पाता ये जान।। 28
शिव संस्कार की विधि बताकर, मुनि करते षडध्वशोधन वर्णन।
फिर संस्कार के विविध प्रकारों का, श्रीकृष्ण को कराते श्रवण।। 29
नित्य नैमित्तिक कर्म बताये, काम्यव्रत व न्यास का किया वर्णन।
मानसिक पूजा व शिव पूजन, विधि का भी कराते श्रवण।। 30
आवरण पूजा की विस्तृत विधि को भी मुनि बताते हैं।
पंचावरण मार्ग से किये जाने वाला स्तोत्र सुनाते हैं।। 31
मन्त्र सिद्ध कर लिया है जिसने और जिसे इसमें विश्वास।
श्रद्धा भाव से जो जपता, पूर्ण होती उसकी सब आस।। 32
शिवलिङ्ग पूजन श्रेष्ठ बताया, जो करता है लिङ्ग आराधन।
पापो से वह मुक्त हो जाता, शिव कृपा का बनता वो भाजन।। 33

शिवलिङ्ग महाव्रत अति गोपनीय, सब व्रतो में उत्तम कहलाता है।
सभी देवो ने इसे किया है, इससे ही देवत्व को पाया है।। 34
शिवलिङ्ग व शिवमूर्ति की प्रतिष्ठा विधि का किया वर्णन।
अब मुनिवर श्रीकृष्ण को, योग अंगो का कराते श्रवण।। 35
यम नियम आसन प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि।
सिद्ध योगी सब ऐश्वर्य पाता, मनवाँछित होती उपलब्धि।। 36
ध्यान समान नही कोई तीर्थ, ध्यान समान नही कोई तप।
ध्यान समान नही यज्ञ कोई, ध्यान योगी को सब है सुलभ।। 37
बारम्बार शिव का चितंन, करना ही ध्यान कहलाता है।
श्रद्धा पूर्वक ध्यान करे जो, पाप मुक्त हो जाता है।।38
शिवयोगी के निंदक जग में, अधोगति को पाते है।
शिवयोग परायण जहाँ भी रहते, वे स्थल पावन हो जाते है।। 39
मुनि उपमन्यु से श्रीकृष्ण, ज्ञानयोग को पाते हैं।
मुनियों को कथा सुना वायुदेव, अन्तर्धान हो जाते हैं।। 40
ब्रह्मा आदेशित सरस्वती नदी में, मुनि करते अवभृथ स्नान।
पूर्व वृतान्त स्मरण करके, मुनि करते वाराणसी प्रस्थान।। 41
दिव्य तेज पुञ्ज का कर दर्शन, सब मुनि हो जाते हैरान।
तेजपुञ्ज अदृश्य हुआ तो, ब्रह्मवन की ओर किया प्रस्थान।। 42
ऋषि मुनि ब्रह्मा जी को, सब वृतान्त सुनाते हैं।
तेजपुञ्ज वह ज्योतिर्मय लिङ्ग था, ब्रह्मा जी उन्हें बताते हैं।।43
तेजपुञ्ज यह सूचित करता, मिल जायेगी मुक्ति तुम को अब।
सनत् कुमार मिलेंगे तुमको, मेरू पर्वत जाओ सब।। 44
मेरू पे पहुँचकर मुनियों ने, सनत्कुमार के किये दर्शन।
तभी पत्नि सुयशा के संग, नन्दी जी का हुआ आगमन।। 45

नन्दी जी से सनत्कुमार, ज्ञान योग को पाते है।
नन्दी के दृष्टिपात मात्र से, मुनियो के पाप कट जाते है।। 46
सूत जी बोले सनत् उसी ज्ञान को, मेरे गुरू व्यास जी को कराते श्रवण।
उनसे ही सुन कर के मैंने, संक्षेप में किया है वर्णन।। 47
शिव पुराण शिव को अति प्यारा, भाव से जो करता है श्रवण।
व्यास जी कहते सात आवृति से, होते शिव के साक्षात् दर्शन।। 48
हम भक्ति भाव से विनती करते, शिव चरणों का कर के ध्यान।
प्रमथगण, पुत्रों गौरी संग, साम्ब सदाशिव करें कल्याण।
भोले करें सब का कल्याण।
शिव पुराण के श्रोता वक्ता का, करे सदा शिव जी कल्याण।
करे सदा भोले कल्याण।। 49

॥ सप्तम् वायवीय संहिता - उत्तरखण्ड पूर्ण॥

॥ शिव-भक्ति-रस-धारा सम्पूर्ण॥

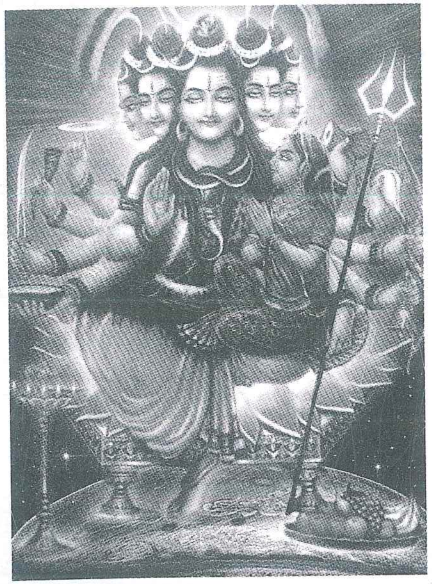

श्री शंकर-शत नामावली

जय महादेव देवाधिदेव, भोले शङ्कर शिव सुखरासी।
जय रामेश्वर जय सोमेश्वर, जय घुश्मेश्वर जय कैलाशी॥
जय गंगाधर त्रिशूलधर शशिधर, सर्वेश्वर जय अविनाशी।
जय विश्वात्मन विभूः विश्वनाथ, जय उमानाथ काटो फाँसी॥
सर्वव्यापी अन्तर्यामी शिव, रुद्र निरामय त्रयलोचन।
भव भयहारी जय त्रिपुरारी, जय मदन दहन जय दुःखमोचन॥
मृत्युञ्जय आशुतोष अघहर, जय बैजनाथ जय वृषभध्वज।
जय लोकनाथ जय मन्मथारि, जय जय महेश जय मृड जय जय॥
जय गौरिपति जय चन्द्रमौलि, जय नीलकंठ जय अभयंकर।
त्रयताप हरो सब पाप हरो, हर हाथ जोड़ ठाड़ो किंकर॥
कालहु के काल जय महाकाल, जय चण्डीश्वर जय सिद्धेश्वर।
जय योगेश्वर जग गोपेश्वर, जय निर्विकार जय नागेश्वर॥
जय ब्रह्म-रूप ब्रह्मण्य-देव, जय धूर्जटे अवढर दानी।
जय घोरमन्यु जय ज्ञानात्मा, सबने ही आन तेरी मानी॥
जय जय सुरेश जय गिरिजापति, जय दिशाध्यक्ष जय दिग्वसनम्।
जय विरूपाक्ष कैवल्य-प्राप्त, निर्वाण रूप, जय ईशानम्॥
व्यालोपवीति जय वामदेव, ओङ्कारेश्वर सब दुःख-हरनं।
हो प्रेमवश्य करुणामय प्रभु, नित भक्तों के आनन्द करनं॥
जय जय कपर्दि जय स्थाणुं, जय नर्वदेश जय ब्रह्मचारी।
जय अमर नाथ जय सोमनाथ, जय शूलपाणि जय कामारी॥
बाघम्बरधारी रुण्डधारी, जय श्मशानवासी बाबा।

मधुर मधुर चण्डाति चण्ड, तेरा स्वरूप भोले बाबा॥
पशुपति सुरपति निर्वाण रूप, जय रवि शशि अनल नेत्रधारी।
है शक्ति कहाँ जो गुण गावें, महिमा है तुम्हारी अतिभारी॥
जय परमानन्द जय चिदानन्द, आनन्दकन्द जय दयाधाम।
दुनियां से सुनते आये हैं, भक्तों के सारे सभी काम॥
जय नन्दीश्वर जय प्रणतपाल, जय शम्भु सनातन हर हर हर।
पूरण समर्थ सर्वज्ञ सर्व, जय त्रिपुण्डधारी हर हर हर॥
कल्याण रूप और शान्त रूप, ताण्डव के हेतु हे डमरूधर।
हर पाप क्लेश और दोष सभी, त्रयताप दया करके सब हर॥
शरणागत हैं प्रभु त्राहि-त्राहि, निज भक्ति देहु अरु करो अभय।
जो नाम जपै यह प्रेम सहित, उसको नहीं व्यापै कोई भय॥
तेरा नाम मात्र ही जनम जनम, के पाप भस्म कर देता है।
हैं धन्य भाग उस मानव के, इतने नाम नित लेता है॥

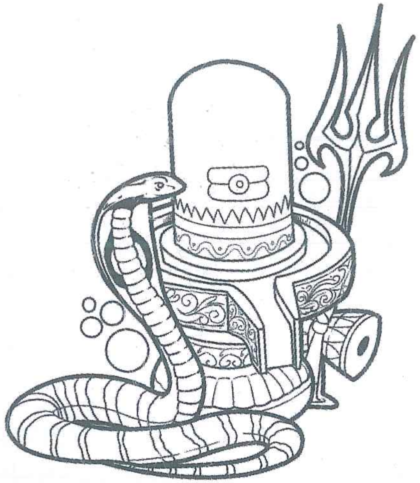

आरती श्री शंकर जी की

जय शिव ओंकारा ॐ जय शिव ओंकारा
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धांगी धारा॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे।।
ॐ जय शिव ...॥
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे।
त्रिगुण रूपनिरखता त्रिभुवन जन मोहे।।
ॐ जय शिव ...॥
अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी ।
चंदन मृगमद सोहै भाले शशिधारी।।
ॐ जय शिव ...॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे।।
ॐ जय शिव ...॥
कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता ।
जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता।।
ॐ जय शिव ...॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर मध्ये ये तीनों एका।।
ॐ जय शिव ...॥
काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रह्मचारी ।
नित उठि भोग लगावत महिमा अति भारी।।
ॐ जय शिव ...॥
त्रिगुण शिवजीकी आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।।
ॐ जय शिव ...॥

श्री साम्ब सदाशिवाय नमः

रुद्राष्टकम

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेहम्
निराकारमोङ्करमूलं तुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं पालं गुणागारसंसारपारं नतोहम्
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभिरं मनोभूतकोटिप्रभाश्री शरीरम् ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा
चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्र्यःशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेहं भवानीपतिं भावगम्यम्
कलातीतकल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्दसंदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी
न यावद् उमानाथपादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोहं सदा सर्वदा शम्भुतुभ्यम् ।
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।।

सोमनाथ

मल्लिकार्जुन

श्री महाकालेश्वर

ओङ्कारेश्वर

केदारनाथ

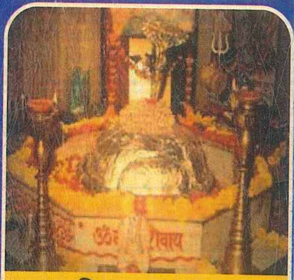
भीमशङ्कर

विश्वनाथ

त्र्यम्बकेश्वर

बैद्यनाथ

नागेश्वर

रामेश्वरम्

घुश्मेश्वर